नई शेरो शायरी

कलामे तावां

नई शेरो शायरी



ताबां



१९५८
साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन,
दिल्ली ।



मूल्य
दो रुपया आठ आना



मुद्रक
सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड,
डिप्टी गंज, दिल्ली ।

दो शब्द

उर्दू शायरी फारसी शायरी की देन है इससे इंकार नही किया जा सकता परन्तु क्योंकि इसका विकास भारत मे हुआ है इसलिए भारतीय संस्कृति, भारतीय साहित्य और भारती जन-जीवन का प्रभाव भी इस पर न हुआ हो ऐसी बात नहीं है ।

उर्दू शायरी या हिन्दी कविता, दोनों के ही आदि रूपों में आत्मा, परमात्मा की फिलासफी और शृंगार की प्रधानता रही है। इसको रूपकों में प्रत्यक्ष और परोक्ष में नर और नारी को ही चित्रित किया गया है। उन्ही के रूप मे अंत और अनंत की भावना को कवियों और शायरों ने साकार किया है ।

उर्दू शायरी में शराब को सोमरस का स्थान मिला है जिससे हिन्दी कविता महरूम सी ही रह गयी है । नई हिंदी कविता में जो इसके रूप की थोड़ी सी झलक आई है वह संस्कृत के सोमरस का प्रभाव न होकर उर्दू की शराब का ही प्रभाव है।

यह शराब भी लौकिक और पारलौकिक दोनों ही रूपों में सामने आई है और इसमें डूबकर शायरों ने लोक और परलोक, आत्मा और परमात्मा का चित्रण किया है, नर और नारी के रूप को निखारा है, और मानवीय भावना के कल्पना के आधार पर वे रगीन चित्र चित्रित किये हैं कि जिनकी छाप पाठकों के दिलों पर अमिट हो गई है। मिट नही सकती वह जब तक उसका साहित्य जीवित है और उसमें इन्सानी दिल को हिला देने की शक्ति विद्यमान है।

उर्दू शायरी में ढांचा भारतीय न होने से, कहीं-कही शायरों के विद्वता प्रदर्शित करने के नाते फारसी शब्दों की झड़ी लगा देने से आम भारतीय उसे समझने से महरूम रह जाता है परन्तु फिर भी उर्दू जबान का आकर्षण, उसकी सफाई-मंजाई और प्रभावत्मकता अपना असर करती ही है।

उर्दू शायरी में जो आकर्षण है वह अपना सानी नहीं रखता। उसमें दिल को सीधा छू देने की शक्ति है, बात को दो शब्दों में कह देने की करामात है

और चित्र खींचने की क्षमता है।

यह रही पुरानी शायरी की बात। परन्तु जैसे समय बदला, दुनिया पारलौकिक विचारों से भौतिक विचारों का ओर बढ़ी और जो कुछ इन्सानी मस्तिष्क ने सच करके दिखाया उसकी अहमियत को अनुभव किया गया, माना गया, तो शायरी ने भी अपना रुख बदला और समय की भ्रान्ति को खुले दिल से अपनाया। इन्सान की प्रगति को परखा और उसके चित्र अंकित किये। शराब शृंगार और खुदाई फिलासफी से आगे बढ़ कर (या पीछे हटकर भी इसे कुछ लोग कह सकते हैं) इन्सानी तरक्की को चित्रित किया, और खूब किया। उर्दू शायरी का यह रुख उसकी जिन्दगी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जड़ता नहीं है उसमें, आगे बढ़ने और बढ़ती हुई शक्ति को पहचानने और अपनाने की क्षमता है। इससे यह सिद्ध होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में उर्दू के प्रसिद्ध आधुनिक शायर श्री तावां की शायरी के कुछ चुने हुए रूप पाठकों को देखने के लिए मिलेंगे। आपकी शायरी में पुराना और नया दोनों का मिश्रित रूप पाया जाता है। जीवन के रंगीन और प्रगति के जिन्दा दिल पहलू, दोनों ही आपकी शायरी में साथ-साथ चलते हैं और इसीलिए उनमें दिलों को गुदगुदा देने की शक्ति भी है और उत्साह तथा उमंग के साथ मानवीय प्रगति की राह पर बढ़ने की क्षमता भी है। विचार भी है और भावना भी। दोनों का सुन्दर समन्वय है।

एक विशेषता जो मैंने आपकी शायरी में देखी वह है प्रकृति से प्रेम, पहाड़ी गीतों से प्रेम :—

दूर वादी मे कोई गीत किसी ने छेड़ा,
तुंद आवाज उठी, गूंजी, फिजा में बिखरी,
तुंद–जिस तरह उबलता है पहाड़ी चश्मा,
गूंजता संगेगिरा वार से टकराता हुआ।

× × × ×

चीढ़ की छावों में गाते हुए चश्मे के करीब
जाने क्यों देर से बैठी है पहाड़ी लड़की ?

आपकी शायरी में नजाकत भी है, विद्वता भी और कल्पना का समन्दर

लहराता दिखाई देता है। हिन्दी पाठकों के सामने जो कठिनाई आने वाली है वह है आपकी भाषा की क्लिष्टता। उसे दूर करने के लिए लेखक ने कठिन शब्दों का अर्थ नीचे दे दिया है। इससे पाठकों को शायरी का अर्थ समझने में कठिनाई नहीं होगी।

मुझे विश्वास है कि हिन्दी पाठक आपकी शायरी को पूरे आकर्षण के साथ अपनायेंगे, क्योंकि मैंने भी एक हिन्दी पाठक होने के नाते इसमें रस लिया है और आनन्द लाभ किया है।

—यज्ञदत्त शर्मा

?

जब सकूते-शाम[१] में इक नग़मगी[२] सी पाओगी,
तुम भी अपनी जिन्दगी में कुछ कमी सी पाओगी।
'पी कहाँ' पैदा करेगी जब फ़िज़ा[३] में इर्तिआश[४],
जिंदगी के साज में इक बरहमी[५] सी पाओगी।
झूम कर छा जायेगी सावन की जब काली घटा,
इन हसीं[६] आंखों में इक नाज़ुक नमी सी पाओगी।
बे सबब पज मुर्दा, अफ़सुर्दा[७] रहोगी रात दिन,
बे सबब दिलचस्पियों में तुम कमी सी पाओगी।
एक लज़्ज़त[८] सी मिलेगी दास्ताने-हिज्र[९] में,
ग़म के अफ़सानों में तुरफ़ा[१०] दिलकशी सी पाओगी।
हूक सी दिल में उठेगी सुन के कोयल की सदा[११],
मीठे नग़मों में भी ग़म की चाशनी सी पाओगी।
देख कर रंगे-चमन[१२] दिल की कली मुर्झायेगी,
तुम बहारों में भी इक अफ़सुर्दगी[१३] सी पाओगी।
जब कभी भूले से दिल में याद आयेगी मिरी,
गर्म पेशानी में[१४] तुम कुछ-कुछ नमी सी पाओगी।
जब किसी अखबार में देखोगी तुम मेरा कलाम[१५],
आंख में आंसू मगर दिल में खुशी सी पाओगी।

---

१. संध्या समय की चुप्पी। २. संगीत। ३. वातावरण। ४. कम्पन। ५. उत्तेजना। ६. हसीन (सुन्दर)। ७. खिन्न तथा उदासीन। ८. स्वाद। ९. विरह की कथा। १०. अनोखी। ११. आवाज़। १२. बाग का रंग। १३. उदासीनता। १४. माथे में। १५. कविता।

मंज़िल

ताक़ते-रफ़्तार[1] 'तावां' आज़माना है मुझे,
मुश्किलाते-राह को[2] आसां बनाना है मुझे,
कुछ भी हो लेकिन क़दम आगे बढ़ाना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।
गर्मी-ए-रफ़्तारे-अह्दे-नौजवानी[3] की क़सम,
बर्क़-गामी[4] की क़सम, तूफ़ां-ख़रामी[5] की क़सम,
इम्तियाज़े-दूरी-ओ-क़ुरबत[6] मिटाना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।
बढ़ चुका है जो क़दम पीछे वो हट सकता नहीं,
चाहे कुछ हो जाये लेकिन मैं पलट सकता नहीं,
अब तो बढ़ना है मुझे, बढ़ते ही जाना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।
डगमगाता, लड़खड़ाता, ठोकरें खाता हुआ,
मैं चला जाऊंगा कुर्बो-बोद[7] पर छाता हुआ,
जर्रा-ए-साबित[8] को सइयारा[9] बनाना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।
रास्ते में ख़श्मगीं[10] तूफ़ान हायल ही सही,

---

१. गति की शक्ति। २. मार्ग को कठिनाइयों को। ३. युवावस्था को तीव्रगति। ४. बिजली की तेज़ी। ५. तूफ़ान की चाल। ६. दूरी तथा निकटता का अन्तर (भेद)। ७. निकट तथा दूरी। ८. अचल कण। ९ गतिशील नक्षत्र। १०. क्रोधातुर।

एक इक जर्रा जफ़ा-कोशी पे मायल[1] ही सही,
हम नशीं[2] फिर भी क़दम आगे बढ़ाना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।
खार[3] क्या तलवार सद्दे-राह[4] बन सकती नहीं,
आहनी दीवार[5] सद्दे-राह बन सकती नहीं,
इंक़िलाबी अज़्मे--मुस्तहकम[6] दिखाना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।
राह की दुश्वारियों से खेलता जाऊंगा मैं,
सख्त नाहमवारियों से[7] खेलता जाऊंगा मैं,
आबला-पाई पे[8] 'ताबां' मुस्कराना है मुझे,
दूर जाना है मुझे।

१. अत्याचार करने पर उतारू। २. सहचर। ३. कांटा। ४. रास्ते की बाधा। ५. लोहे की दीवार। ६. दृढ़ संकल्प। ७. असमतल भूमि में। ८. पैरों के छालों पर।

हसीन इंक़िलाबी

वो होंटों पे रक़्सां शुआए शिहाबी[1]
वो चेहरा वुफ़ूरे-हया[2] से गुलाबी
वो नैना रसीले कि मधु के पियाले
वो नज़रों का आलम शराबी-शराबी
वो माथे पे बिंदी फ़लक[3] पर सितारा
वो आरिज़[4] कि आईनए-माहताबी[5]
वो बालों में सावन की रातों का आलम
वो साड़ी का आंचल गुलाबी-गुलाबी
. वो मौज़ू[6] सा क़द, वो छरेरा सा जुस्सा[7]
वो लम्बी सी गर्दन, वो चेहरा किताबी
लताफ़त मुजस्सम,[8] नज़ाकत सरापा
बहारों का इक पैकरे-नौ-शबाबी[10]
शराफ़त से मामूर[11] उसकी जसारत[12]
हिजाबों में डूबी[13] हुई बे हिजाबी
वो पस्ती में भी एक शाने-बुलंदी
वो आला तख़य्युल[14] की गर्दूं रिकाबी[15]

---

१. होंटों पर नृत्यशील तारों की किरण। २. लज्जा के बाहुल्य से ३. आकाश। ४. कपोल। ५. चन्द्र-दर्पण। उचित (सुन्दर)। ७. बद ८. कोमलता का प्रतिरूप। ९. नज़ाकत। १०. नवयौवन .क प्रतिरूप। ११. परिपूर्ण। १२. साहस। १३. आवरणों में। १४. उच्च कल्पना। १५. आकाश तक उड़ान लेना।

लबे-अहमरीं पर[1] वो आजाद नारे
वो नाजुक से हाथों में परचम शिहाबी[2]
रगों में खा हुर्रियत का[3] लहू है
निगाहों में है मंजिले कामियाबी
तखय्युल में एहसासे-दूरी-ए-मंजिल[4]
क़दम उठ रहे हैं शताबी-शताबी
हर इक गाम[5] पर लाख फ़ितने[6] उठाती
चली आ रही है हसीं[7] इक़िलाबी

---

१. लाल होठों पर। २. लाल झंडा। ३. स्वतंत्रता का खून। ४. मंजिल की दूरी का अनुभव। ५. क़दम। ६. उपद्रव। ७. हसीन (सुन्दर)।

एक मुशाहिदा[१]

भीग चुका है रात का दामन तारे झिलमिल होते हैं,
जाग उठी है सुबह की देवी, दुनिया वाले सोते हैं।
पूरब में कुछ हल्की-हल्की संवलाइट सी छाई है,
पहली किरन नज़रों से निहां[२] मसरूफ़े-ख़ुल्द-आराई[३] है।
दूर यहां से दूर उफ़क़[४] पर कच्ची चांदी गलती है,
फ़ितरत की दोशीज़ा[५] रुख़ पर नूर का[६] ग़ाज़ा मलती है।
फैल चुकी है सुबह की ताबिश[७] जलवा गाहे-हस्ती[८] में,
जंगल में कुहसारों में[९] मैदानों में और बस्ती में।
घाट पे इक लड़की गंगा से जल भरने को जाती है,
उठती जवानी, रूप निराला, चलती है और गाती है।
गाल दमकते कुन्दन जैसे आंखों से मय ढलती है,
काफ़िर गेसू दोश पे[१०] बिखरे, मस्त अदा से चलती है।
होटों पर बेताब तराने रक़्से-पैहम[११] करते हैं।
कैफ़ो-मस्ती[१२] की दौलत से सुबह का दामन भरते हैं।
कौन है ये संगीत की रानी किन आंखों का तारा है?
जिसके ग़म में गाती है वो कौन मुक़द्दर वाला है?
जंगल सारा गूंज रहा है, मीठी-मीठी तानों से,

---

१. प्रत्यक्ष दर्शन। २. निहित। ३. स्वर्ग सजाने (में व्यस्त)। ४. क्षितिज। ५. सुन्दरी। ६. चेहरे पर रोशनी। ७. चमक। ८. संसार। ९.पर्वतमालाओं में। १०. केश कांधे पर। ११. निरंतर नृत्य। १२. आनन्द तथा उन्माद।

झांक रही है राग की देवी आकाशी ऐवानों से[1]।
रस की भरी आवाज हवा की लहरों में लहराती है,
नग़मों का इक जाल फिजा में जैसे बुनती जाती है।
ज़ेरों-बम[2] गंगा की लहरों से आकर टकराते हैं,
टकरा कर जब उठते हैं तो हस्ती पर छा जाते हैं।
पंचम तानों से सीने में दीपक जलते जाते हैं,
ढोलों के सांचे में जैसे नग़मे ढलते जाते हैं।
गीत के हर-हर बोल से दिल में नश्तर टूटा जाता है,
हाथ से मेरे होश का दामन 'ताबां' छूटा जाता है।

---

१. महलों से। २. संगीत की ऊँची नीची तानें।

उम्मीद

ज़िंदगी के भबकते हुए मैखाने से,
बादा-ए-तल्ख़ी-ए-अय्याम[१] अभी पीना है,
साज़गारी[२] नहीं करती है हवा-ए-इमरोज़[३],
फिर भी उम्मीद पे फ़र्दा[४] कि हमें जीना है।

नारसा बख़्त[५]—ज़माने का वहीमाना[६] चलन,
कितनी उफ़तादें[७] हैं दुनिया में मुहब्बत के लिए,
और बेरुह रवायात का फ़र्सूदा निज़ाम[८],
ये भी मिनजुमला-ए-आफ़ात[९] है उल्फ़त के लिए।

दर्द के बोझ से एहसास दबा जाता है,
हौसले पस्त हुए जाते हैं तदबीरें ढाल,
तीरा-ओ-तार[१०] है दुनिया-ए-तमन्ना की फ़िज़ा[११],
छा रहे हैं ग़मो-आलाम के[१२] गहरे बादल।

टिमटिमाता हुआ उम्मीद का नन्हा सा चिराग़,
किसी मायूस के सीने का महकता हुआ दाग़।
अब भी जलता है मगर ग़म के शबिस्तानों में[१३]।

---

१. कटु समय की शराब। २. सहायता। ३. वर्तमान हवा (परिस्थितियाँ)। ४. कल (भविष्य)। ५. दुर्भाग्य। ६. पशुओं का सा चलन। ७. मुसीबतें। ८. मृत परम्पराओं की जीर्ण व्यवस्था। ९. कुल मुसीबतों में से एक। १०. अंधकारमय। ११. अभिलाषा रूपी संसार का वातावरण। १२. दुखों और चिंताओं के। १३. शयन कक्षों में।

लम्हए-फ़ुर्सत[१]

उफ़ ये पूरब की हवा, हाय ये काले बादल
रस भरी बूंदों से भीगा हुआ शब[२] का आंचल
ला मेरा जाम, कहां है मेरी मय की बोतल ?
आज पीने का मज़ा है मुझे पी लेने दे।
मौत की छांओं में एक रात तो जी लेने दे।।
रात अपनी है मेरी जान, सहर[३] हो कि न हो,
फिर कोई लम्हा मुहब्बत का बसर हो कि न हो,
और जुबारे-तरब[४] शोला-ए-तर[५] हो कि न हो,
कल खुदा जाने कहां जुस्तजू ले जायेगी ?
अजनबी वादियों मे ठोकरें खिलवायेगी।।
मैं मुसाफ़िर हूं बहुत दूर है मेरी मंज़िल,
राह में सैंकड़ों तूफ़ाने-हवादिस हायल[६]
मैं कहां और कहां फिर ये निशाते-महफ़िल[७]
सुबह होते ही उखड़ जायेगा डेरा अपना।
जाने कल रात कहां होगा बसेरा अपना।।
ग़म का मारा हुआ आलम का तड़पाया हुआ,
नासाज़ा[८] सूरते-हालात[९] का सहमाया हुआ,

---

१. अवकाश का क्षण। २. रात। ३. सुबह। ४. आनन्द का प्रकाश फैलाने वाली। ५. शराब। ६. घटनाओं के तूफान बाधक है। ७. महफ़िल का रस। ८. अमंगलपरिस्थियों का। ९. जीवन की कश-म-कश

और इस कश-म-कशे-जीस्त[1] से उकताया हुआ,
तोड कर बन्दे-कफ़स[2] आज यहां आया हूं।
अपने पहलू में दहकता हुआ दिल लाया हूं॥
बज़्म में धूम मचाने के लिए आया हूं,
तलख़ी-ए-ग़म को[3] भुलाने के लिए आया हूं,
आज मैं पीने-पिलाने के लिए आया हूं,
तू भी पी ले, मेरी जां, मुझको भी पी लेने दे।
मौत की छांओं में इक रात तो जी लेने दे॥

---

१. पिंजरे (परिस्थितियों) का बंद। २. गम की कटुता को।

याद

आज फिर फ़िक्रो- नज़र[1] ख़्वाबों की जौलां गाह[2] है,
ज़िन्दगी भटकी हुई है आरज़ू गुमराह है,
आज फिर याद आ रहा है वो शबिस्ताने-जमाल[3] ।
नीम ख़्वाबीद[4] । शबिस्तां नूरो नकहत का[5] सराब[6] ,
इन बरसाती हवा में चौधवीं का माहताब ,
आस्मां पर दूर तक फैला हुआ तारों का जाल ।
और तारों की ख़ुनक[7] छांओं में वो मेरे क़रीब,
रिफ़अते-अर्शे-बरीं पर[8] ख़ंदाज़न[10] मेरा नसीब,
हर नफ़स मौजे-मसर्रत हर नज़र अक्से-जमाल[11]
और उन रंगीं लबों का एक लम्से आतशीं[12] ,
आज तक जो मेरे होटों पर है लज्जत आफ़रीं[13] ,
हो गया था जिस से दो रूहों का बाहम इन्तिसाल[14]
बेकरां लम्हे मुक़ामो-वक़्त की[15] राहों से दूर,
ज़िन्दगी और मौत की इन कश-मकश गाहों से दूर,
आज वो दमसाज़[16] लम्हे हो गये ख़्वाबों-ख़याल ।

---

१. चिंतन शीलता २. दौड़ाने की जगह ३. रूप का शयनगृह ४ अर्धनिद्रित ५. प्रकाश तथा सुगंधि का ६. मृग मरीचिका ७. चांद ८. शीतल ९. सब से ऊंचे आकाश की ऊंचाई पर १०. हंस रहा ११. हर श्वास आनन्द की लहर है और हर दृष्टि सौंदर्य का प्रतिबिंब १२. अग्नि का सा स्पर्श १३. रस छिड़के हुए १४. आपसी मिलाप १५. असीमित क्षण (स्थान तथा समय के)]१६. सहचर, अनुकूल ।

आज फिर फ़िक्रो-नज़र ख्वाबों की जौलांगाह है,
ज़िन्दगी भटकी हुई है आरज़ू गुमराह है,
आज फिर याद आ रहा है वो शबिस्ताने-जमाल।

असरे-माह

चश्म-ए-शबनम में[1] जैसे घुल रही है चांदनी,
रफ़्ता रफ़्ता-तीरगी[2] में घुल रही है चांदनी।
फैलता जाता है दुनियां पर हसीं[3] ख्वाबों का जाल,
जिस तरह शायर के पुर-असरार[4] आवारा खयाल।
एक बेपायां फ़ुसूं तारी है[5] ज़ेरे-आस्मां[6],
ले रहा है दर्द का मारा शबाब[7] अंगड़ाइयां।
कैफ़ो-मस्ती का वुफ़ूरे[8]-बेकरां आसाब में[9],
बह रही है जिन्दगी जज़्बात के सैलाब में।
ये दरख्शां[10] चांदनी रातें ये लम्हाते-गुनूं[11]
किस के माथे जाएगा या रब, तमन्नाओं का गूं[12]

गुरेज[1]

मेरे महबूब न कर सइये-मुदावा-ए-अलम[2],
मेरे अश्कों की[3] घटाओं को बरसने दे अभी,
और हां और, तमन्ना का लहू बहने दे,
और हां और, जवानी को तरसने दे अभी।
ये जवां रात, ये तारे, ये दरख्शां माहताब[4],
ये तेरा हुस्न, ये रानाई,[5] ये नौख़ेज़ शबाब[6],
महफ़िले - जामो - सुबू, अंजुमने - चंगो - रबाब[7],
तेरी सौगंद मेरे दर्द का दरमां ही नहीं।
तेरी आग़ोश[8] है जज्बात की फ़िर्दौस[10] मगर,
आह मिलती ही नहीं कश-मकशे-गम से निजात[11],
आज तक तश्ना-ए-तकमील[12] रहा मेरा जुनूं[13],
वही जंजीर-मशय्यत[14] वही जिंदाने-हयात[15]।
मेरा एहसास[16] अभी तक है, तजबज़ब[17] का शिकार,
एक बेरब्त से माहौल का आईनादार[18],
टूट जाये न कहीं फ़िक्रो-नजर का पिंदार[19],

---

१. विमुखता। २. दुख दूर करने की चेष्टा। ३. आंसुओं की। ४. उज्ज्वल चांद। ५. सुन्दर। ६. तरुण यौवन। ७. शराब के प्याले और मटके की महफिल, चंग और रबाब (बाजों के नाम) की सभा। ८. इलाज। ९. गोद। १०. स्वर्ग। ११. मुक्ति। १२. अपूर्ण। १३. उन्माद। १४. भाग्य रूपी जंजीर। १५. जीवन रूपी जेलखाना। १६. अनुभव। १७. द्विविधा।

मेरे महबूब न कर सइये-मुदावा-ए-अलम,
अभी कुछ और तमन्नाओं का खूँ कर लूँ मैं,
इतनी मुहलत तो दे तकमीले-जुनू कर लू मैं।

दो रुख़

पी चुका हूं म-ए-इशरत[1] के छलकते सागर ,
मैंने समझा था बहारों से बनी है दुनिया
फूल ही फूल हैं हस्ती के गुलिस्तानों में ,
दिन बसर होते थे तफ़रीह[2] में अहबाब के[3] साथ
रातें कटती थीं हसीनों के शबिस्तानों में[4] ।
ऐशो-इशरत के लिए वक्फ़[5] था हर-हर लम्हा
रक्स गाहों में[6], तमाशों में खुमिस्तानों में[7] ।
और तलख़ाबें अजीयत[8] भी पिया है मैंने ,
मैं ने फूलों को ही समझा था चमन का हासिल[9]
हाय कांटों ने बहारों का फ़ुसूं[10] तोड़ दिया ,
मेरे भबके हुए माहोले[11] ग़मी ने ऐ दोस्त
लेके हाथों से मेरा साज़े-जुनूं[12] तोड़ दिया ,
और सोये हुए अहसास की बेदारी ने[13]
रामशो-रंग का पिंदारे-जवू[14] तोड़ दिया ,

---

१. सुख विलास की शराब । २. मनोरंजन । ३. मित्रों के । ४. शयन गृहों में । ५. अर्पण । ६ नाच-घरों में । ७. शराब खानों में । ८. यन्त्रणा का कड़वा पानी । ९. निष्कर्ष । १०. जादू । ११. ग़म के वातावरण । १२. उन्माद रूपी साज । १३. जागने में । १४. संगीत तथा रंग का झूठा दम ।

मौत और ज़िंदगी

ये मये-तल्ख[1] भी पीना ही पड़ेगी इक दिन।
मौत बरहक़[2] सही पर जीस्त का हासिल[3] तो नहीं,
कारवाने-तलबो-शौक की[4] मंजिल तो नहीं,
कितनी उलझी हुई राहों से गुजरना है अभी,
जिंदगानी की मुहिम[5] सर हमें करना है अभी,
ज़िन्दगी मौत से तारीक[6] भयानक पुरहौल[7],
इक गिरांबार तअत्तुल का फ़सुर्दा माहौल[8],
इसलियह खाने में[9] इक शमअ जलालें ऐ दोस्त,
बज़्मे-आजादी-ए- जमहूर[10] सजालें ऐ दोस्त,
खूने-महताब से[11] तामीरे-सहर[12] करना है,
क़स्रे-जुलमत को[13] अभी जेरो-ज़बर करना है[14],
आलमे-ताज़ा[15] की तशकील का सामान करें,
जब तलक जिंदा हैं क्यों मौत का अरमान करें,
मौत तो आयेगी आकर ही रहेगी इक दिन।

---

१. कड़वी शराब। २. सच्चाई पर। ३. जीवन का निष्कर्ष। ४. चाह तथा प्रेम के कारवाँ की। ५. जीवन का मोर्चा। ६. अंधेरी। ७. भयानक। ८. ओझल गति अवरोध का उदासीन वातावरण। ९. अंधेरे घर में। १०. स्वतन्त्रता की सभा। ११. चाद के रक्त से। १२. सुबह का निर्माण। १३. अंधकार रूपी महल को। १४. ढाना है। १५. नव संसार। १६. निर्माण।

हयाते-जावेद[1]

एक दिन तारीख़ की ज़ुलमत में[2] खो जाऊंगा मैं,
ज़िंदगी की राह में पामाल हो जाऊंगा मैं,
ये शफ़क़ आलूद[3] शामें, नर्मो-नाज़ुक सी फ़िज़ा[4],
ढल गई रानाइए-फ़ितरत[5] मेरे अशआर में[6];
गा चुका हूं कितने रंगी गीत साज़े-इश्क़ पर
पढ़ चुका कितने क़सीदे[7] हुस्न की सरकार में;
अह्ले-गुलशन से[8] कहा अफ़साना-ए-बर्क़ो-शरार[9]
क़िस्सा-ए-मुफ़लिस[10] सुनाया महफ़िले-ज़रदार में[11];
दी बशारत[12] सुबह की ज़ुलमतज़दा[13] इन्सान को
क़लबे-अस्रे-नौ की[14] धड़कन है मेरे अफ़कार में[15];
महरमे-असरारे-फ़ितरत[16] है मेरी फ़िक्रे-रसा[17]
बारहा पहुंचा सवादे-साबितो-सय्यार में[18]।
मेरे मरने से मेरे अशआर मर सकते नहीं
मेरी तसनीफ़ें[19] मिरे अफ़कार मर सकते नहीं।

---

१. अमर जीवन। २. इतिहास के अंधकार में। ३. गुलाबी। ४. वातावरण। ५. प्रकृति का सौन्दर्य। ६. कविताओ में। ७. प्रशंसा काव्य। ८. बाग (संसार) वालों से। ९. बिजली तथा चिंगारी की कहानी। १०. निर्धन की कहानी। ११. धनवानो की सभा में। १२. मंगल सूचना। १३. अंधेरे के मारे हुए। १४. नवयुग के हृदय की। १५. रचनाओं में। १६. प्रकृति के रहस्यों की ज्ञाता। १७. चिन्तनशीलता। १८. तारों तथा नक्षत्रों के ससार में। १९. पुस्तकें।

पड़ोसन

सिर्फ़ आवाज़ सुनी है उसकी ,
शब[1] की तनहाई में क्या गाती है ? क्यों गाती है ? कौन कहे ?
ज़मज़मा[2] सोज भी है, साज भी है ,
पर्दा-ए-राज़[3] भी ग़म्माज़[4] भी है ,
कितना ग़मगीन है लहजा उसका ?
दर्द में डूबा हुआ ,
एक तस्वीर सी खिंच जाती है
दश्ते-बे-आबो-गयाह[5]
और सड़ती हुई गलती हुई लाशें हर सिम्त[6]
चीलें मंडलाती हुई, पंजे खोले हुए, पर तोले हुए
वादी-ए-मर्ग[7]
अजनबी गीत-बमो-ज़ेर का इक सैले-खां[8]
जैसे सय्यारों का[9] नग़मा कि समझ भी न सकूं
(कोई कहता था कि बंगालिन है)
होगी…मुझे क्या मालूम।

---

१. रात। २. गीत। ३. रहस्य का पर्दा। ४. संकेतक। ५. पानी और घास से रहित जंगल। ६. ओर। ७. मृत्यु की वादी। ८. गीत के ऊंचे नीचे स्वरों का एक सैलाव। ९. नक्षत्रों का।

एक रोमान[१]

ये रात अपनी है ये माहताब[२] अपना है,
यहीं पे वक्त का सैले-खां[३] ठहर जाय।
हमें भी चलना है मंजिल तलक[४] मगर ऐ काश,
जरा सी देर को ये कारवां ठहर जाय

पिलाई आज जो रंगीं लबों के सागर से,
किसी ने ऐसी म-ए तुन्दों-तेज़[५] पी ही नहीं।
ये कहकशां[६] ये सितारे गवाह हैं ऐ दोस्त,
तेरे अलावा मुहब्बत किसी से की ही नहीं।

गुनाह! जिंदगी बेरंग है बग़ैर गुनाह,
हयात सहने-चमन मासियत है फस्ले-बहार[७]।
शराबी होंटों की मख्मूर अंखड़ियों की क़सम,
रिवाजो-रस्मे-जहां गर्क़े-बादा-ए-गुलनार,

तेरा शबाब[९] तेरा हुस्न तेरी रानाई[१०],
खिलें ये फूल तो सारा चमन महक उट्ठे।
तरब[११] की आग को भड़का दे और भड़का दे,
कि जिंदगी की फ़िज़ा-ए-खुनक[१२] दहक उट्ठे।

---

१. प्रेम। २. चांद। ३. सैलाब। ४. तक। ५. तेज शराब। ६. आकाश गंगा। ७. जीवन एक बाग है और पाप वसंत ऋतु। ८. संसार की रस्में और रिवाज सुर्ख शराब में डूब जाते हैं। ९. यौवन। १०. सुन्दरता। ११. आनन्द। १२. सर्द वातावरण।

यह भी ग़नीमत है

मौत की तारीकियों में[1] चन्द लम्हों के लिए,
जिन्दगी की शम्मे-नूरानी[2] जला सकता तो हूं।
इस जवूं हाली[3] पै भी 'तावां' वफ़ैजे जामो-मय[4],
मुस्करा सकता तो हूं मैं गुनगुना सकता तो हूं।
कौन बूझे ये पहेली, हुस्न या हुस्ने-नजर?
बज़्मे-ख़ूबां[5] में ग़मे-हस्ती भुला सकता तो हूं।
क्या ग़रज शेखो बिरहमन की सियासत से मुझे,
जिसको मै चाहूं खुदा अपना बना सकता तो हूं[५]।
मेरी किस्मत में नहीं 'जामे-मैए-इरफ़ां'[6] तो क्या,
उसके होंटों के छलकते जाम पा सकता तो हूं।
कहकशां[7] माना कि परवाज़े-तख़य्युल[8] से भी दूर,
उसका कूचा रहगुज़र अपनी बना सकता तो हूं।
मैं फ़रिश्ता भी नही सूफ़ी भी मुल्ला भी नहीं,
आदमी हूं आदमी के काम आ सकता तो हूं।

---

१. अंधेरे में। २ प्रकाशयुक्त शमा। ३. बुरी हालत। ४. शराब और प्याले की कृपा में। ५. अच्छी चीजों में। ६. ज्ञान रूपी शराब का प्याला। ७. आकाश गंगा। ८. कल्पना की उड़ान।

ज़िन्दगी

तलख़ियां[१] जैसे फ़िज़ाओं[२] में घुली जाती हैं,
जुल्मतें[३] हैं कि उमंडती ही चली आती हैं,
आशियानों के क़रीं[४] बिजलियां लहराती हैं,
ज़िन्दगी एक अटल कोहे-गिरां[५] है लेकिन

जिस से बेदाद[६] के शैतान भी टकराते हैं
आग और ख़ून के तूफ़ान भी टकराते हैं,
मुंह की खाते हैं, पछड़ जाते हैं, ज़क[७] पाते हैं,
बाग़े-आलम[८] पे हुए कितने ख़िज़ां[९] के यलग़ार[१०]
ज़िंदगानी पे कई मौत ने छापे मारे।
कभी यूनां[११] से कभी रोम से तूफ़ान उठे,
वादी-ए-नील से उबला कभी ख़ूनी सेलाब,
आग भड़की कभी आतिश कदहे-फ़ारस से[१२]
ज़िंदगी शोलों में तप-तप के निखरती ही गई,
जितनी ताराज[१३] हुई, और संवरती ही गई।

---

१ कटुताएँ। २. वातावरण। ३. अंधेरे। ४. निकट। ५. भारी पहाड़।
६. अन्याय। ७ कष्ट। ८. संसार रूपी बाग। ९ पतझड़। १०. आक्रमण।
११. यूनान। १२. फारिस के अग्निकुंड से। १३. ध्वस्त।

काठ गोदाम से भवाली तक.......

कितनी पुरपेच हैं कुसहार[1] की राहें हमदम ?
कार हर गाम[2] पे बल खाती चली जाती है।
सीना-ए-कोह पे[3] दर्राती चली जाती है।
खोई जाती हैं मनाजिर में[4] निगाहें हमदम।

दामने-कोह में वो नही किनारे गांव
बामो-दीवार पे[5] छाया हुआ करनों का[6] जमूद[7]
जिन्दगी पेट के बल रेंग रही है जैसे
... ...

चीड़ की छांओं में गाते हुए चश्मे के क़रीब
जाने क्यों देर से बैठी है पहाड़ी लड़की ?
मुलतजी[8] नजरें हैं बेगाना-ए-एहसासे-शबाब[9]
... ...

उस तरफ एक सितम दीदा[10] पहाड़ी मजदूर
बारे-हस्ती से[11] झुके जाते हैं शाने[12] जिसके,
हांपता कांपता मंजिल की तरफ जाता है,
... ...

---

१. पर्वतमाला। २. क़दम। ३. पर्वत की छाती पर। ४. दृश्यों में। ५. छतों और दीवारों पर। ६. युगों का। ७. शैथिल्य। ८. विनयी। ९. यौवन के अनुभव से अपरिचित। १०. दुखी। ११. जीवन के बोझ से। १२. कंधे। ११. हरीभरी वादी।

दूर उस वादी-ए-शादाब[1] में वो सेब के बाग़
देखकर जिनको खजिल[2] होता है बाग़े-रिज़वां[3]
उनको सींचा गया इन्सां के लहू से सदियों

... ...

कितनी पुरपेच है कुहसार की राहें हमदम
मार हर गाम पे बल खाती चली जाती है,
सीना-ए-कोह पे दराँती चली जाती है,
खोई जाती हैं मनाज़िर में निगाहें हमदम।

---

१. लज्जित। २. जन्नत का बाग।

पहाड़ी गीत

दूर वादी में कोई गीत किसी ने छेड़ा ,
तुंद[1] आवाज़ उठी, गूँजी, फ़िज़ा में बिखरी ,
तुंद—जिस तरह उबलता है पहाड़ी चश्मा ,
गूँजता—संगेगिरां बार से[2] टकराता हुआ ।

अपने असलाफ़ की अज़मत[3] कि ज़माने का गिला
शूमी-ए-बख़्त[4] कि इब्ना-ए-वतन का[5] शिकवा
डेढ़ सौ साल की मजहूल[6] सियासत के नुकूश[7]
किस तरह अजनबी हाथों ने किया है ताराज[8]
ये चमन, ये पुर्कैफ़[9] बहारों का वतन्
या कोई मन्ज़रे-रंगीं[10]—कोई रुदादे-अजीब[11]
किसी दोशीज़ा-ए-कुहसार[12] का अफ़साना-ए-इश्क़
कौन बतलाये कि इस गीत का मौज़ू[14] है क्या ?

---

१. ऊंची । २. भारी भरकम पत्थर से । ३. पुरखों की महानता । ४. दुर्भाग्य ५. देश के बेटों का । ६. अज्ञात । ७. मित्र । ८. ध्वस्त । ९. आनन्द पूर्ण । १०. रंगीन दृश्य । ११. विचित्र वृतान्त । १२. पहाड़ी युवती १३. प्रेम कथा १४. विषय

दूर उस वादी-ए-शादाब[1] में वो सेब के बाग़
देखकर जिनको खजिल[2] होता है बागे-रिज़वां[3]
उनको सींचा गया इन्सां के लहू से सदियों
... ...

कितनी पुरपेच है कुहसार की राहें हमदम
कार हर गाम पे बल खाती चली जाती है,
सीना-ए-कोह पे दर्राती चली जाती है,
खोई जाती है मनाज़िर में निगाहें हमदम।

---

१. लज्जित । २. जन्नत का बाग।

पहाड़ी गीत

दूर वादी में कोई गीत किसी ने छेड़ा,
तुंद[1] आवाज़ उठी, गूँजी; फिज़ा में बिखरी,
तुंद—जिस तरह उबलता है पहाड़ी चश्मा,
गूँजता—संगेगिरां यार से[2] टकराता हुआ।

अपने असलाफ की अज़मत[3] कि ज़माने का गिला
शूमी-ए-बख़्त[4] कि हुब्ना-ए-वतन का[5] शिकवा
डेढ़ सौ साल की मजहूल[6] सियासत के नुकूश[7]
किस तरह अजनबी हाथों ने किया है ताराज[8]
ये चमन, ये पुर्कैफ़[9] बहारों का वतन्
या कोई मन्ज़रे-रंगीं[10]—कोई रुदादे-अजीब[11]
किसी दोशीज़ा-ए-कुहसार[12] का अफ़साना-ए-इश्क़
कौन बतलाये कि इस गीत का मौजू[14] है क्या ?

---

१. ऊंची। २. भारो भरकम पत्थर से। ३. पुरखों की महानता। ४. दुर्भाग्य ५. देश के बेटों का। ६. अज्ञात। ७. मित्र। ८. ध्वस्त। ९. आनन्द पूर्ण। १०. रंगीन दृश्य। ११. विचित्र वृतान्त। १२. पहाड़ी युवती १३. प्रेम कथा १४. विषय

एहसास

सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊं मैं।
रंगो-नकहत[1] का गिरांबार[2] कुचल डालेगा,
मेरी हस्सास[3] तबियत मेरी खुद्दारी को
ये शबिस्ताने-मसर्रत, तेरी उल्फ़त की क़सम,
मेरी आवारा मिज़ाजी को न रास आयेगा
जिस तरह साज से गिरती हुई नग़्मों की फुवार
और भी तश्नगी-ए-शौक़[5] बढ़ा जाती है,
तेरी ताबिंदा[6] जवानी तेरा रख़्शंदा[7] शबाब[8]
और जज़्बात को गुमराह करेंगे ऐ दोस्त
ज़िन्दगी काकुलो-रुख़सार[10] में खो जायेगी
नग़मओ निकहतो अनवार में खो जायेगी,
मेरा फ़न,[11] मेरा तख़य्युल[12] मेरे नाज़ुक अफ़कार[13]
ऐश की सर्द फ़िज़ाओं में ठिठुर जायेंगे,
गीत—तारों के, शरारों के, चमनज़ारों के[14]
जिनको पहनाना है अलफ़ाज़ के मलबूस[15] अभी
तेरी आग़ोश में[16] घुट-घुट के वो मर जायेंगे
साज ही साज है महफ़िल तेरी, आग़ोश तेरी

---

१. रंग तथा सुगंधि। २. भारी बोझ।
५. प्रेम-पिपासा ६. प्रज्वलित। ७. दी
कपोलों में। ११. कला। १२. कल्पना। १
के वस्त्र। १६. बाहु पाश

ज़ीस्त[१] गर सोज़ नहीं कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं,
सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊं मैं।

१. जीवन।

एहसास

सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊं मैं।

रंगो-नकहत[1] का गिरांबार[2] कुचल डालेगा,
मेरी हस्सास[3] तबियत मेरी खुद्दारी को
ये शबिस्ताने-मसर्रत, तेरी उलफ़त की क़सम,
मेरी आवारा मिज़ाजी को न रास आयेगा
जिस तरह साज़ से गिरती हुई नग़मों की फुवार
और भी तश्नगी-ए-शौक़[5] बढ़ा जाती है,
तेरी ताबिंदा[6] जवानी तेरा रख़्शिंदा[8] शबाब[9]
और जज़्बात को गुमराह करेंगे ऐ दोस्त
ज़िन्दगी काकुलो-रुख़सार[10] में खो जायेगी
नगमश्रो निकहती अनवार में खो जायेगी,
मेरा फ़न,[11] मेरा तख़य्युल[12] मेरे नाज़ुक अफ़कार[13]
ऐश की सर्द फ़िज़ाओं में ठिठुर जायेंगे,
गीत—तारों के, शरारों के, चमनज़ारों के[14]
जिनको पहनाना है अलफ़ाज़ के मलबूस[15] अभी
तेरी आग़ोश में[16] घुट-घुट के वो मर जायेंगे
साज ही साज है महफ़िल तेरी, आग़ोश तेरी

१. रंग तथा सुगंधि। २. भारी बोझ। ३. भावुक। ४. प्रसन्नता रूपी शयन गृह ५. प्रेम-पिपासा ६. प्रज्वलित। ७. दीप्तिमान। ९. यौवन। १०. केशों तथा कपोलों में। ११. कला। १२. कल्पना। १३. रचनाएँ। १४. बाग़ों के। १५. शब्दों के वस्त्र। १६. बाहु पाश में।

ज़ीस्त[१] गर सोज़ नहीं कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं,
सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊं मैं।

१. जीवन।

दो सीन

(१)

शायर ने इक गीत सुनाया
बज़्म[1] पे जैसे मस्ती छाई,
पायल छनकी—साग़र छलका
इश्क़ ने ली फिर से अंगड़ाई,
हुस्न के रुख़ से[2] आंचल ढलका
दूर उफ़क़ पर[3] तारे नाचे
होशरुबा[4] नज्ज़ारे नाचे
दुनियां सारी वज्द[5] में आई

(२)

शायर ने इक गीत सुनाया
बज़्म में जैसे आग लगाई,
रंग रंग में बेताब शरारे
बाग़ी ने तलवार उठाई,
बह निकले फिर ख़ून के धारे
ऐवानों पर लर्ज़ा तारी[6],
सुलतानों पर लर्ज़ा तारी,
दुनिया में इक आंधी आई।

---

१. महफ़िल। २. मुंह से। ३. क्षितिज पर। ४. होश उड़ा देने वाले। ५. उन्मत्तता। ६. महल कांप रहे हैं।

जब और अब

मेरी निगाह रही सूए-आस्मां[1] जब तक
मेरे खयाल भटकते रहे फिज़ाओं में[2]।
महो-नुजूम को[3] क्या जाने मैंने क्या समझा
तवहुमात की[4] महफ़िल सजी खलाओं में[5]
रहे दुरूदो-मुनाजात[6] तश्ना होंटों पर
पढ़ी नमाज ग़मे-जिंदगी की छावों में।
मेरे खयाल पे छाये हुए थे हूरो-क़ुसूर[7]
मेरा शुमार[8] था दुनियां के पारसाओं में[9]

शऊर[10] जाग उठा मैंने खुद को पहचाना,
मुझे जमीन ने इरफ़ां व आगही[11] बख्शी,
सियाह थी ये फिज़ायें बवस्फ़े-माहो-नुजूम[12]
हक़ीर[13] खाक के जर्रों ने रोशनी बख्शी
नया गुदाजे-तमन्ना, नया मजाक़े-नज़र[14]।
जुनूने-शौक़ ने[15] इक ताजा जिन्दगी बख्शी
मेरे जमीर ने[16] मेरे शऊर ने मुझ को
खुद एतमादो-ओ-खुद्दारी-ओ-खुदी बख्शी[17]।

१. आकाश की ओर। २. शून्य में। ३. चांद तारों को। ४. भ्रमों की ५. शून्य म। ६. प्रार्थना स्तुति। ७. हूरें और महल। ८. गणना। ९. सदाचारियों में। १०. अवचेतना। ११. ज्ञान तथा अंतर्ज्ञान। १२. चांद तारों के बावजूद आकाश काला था। १३. तुच्छ। १४. नव दृष्टि। १५. जिज्ञासा के उन्माद ने। १६. अंतरात्मा। १७. आत्म विश्वास, आत्म सम्मान तथा स्वाभिमान प्रदान किया।

इंतिक़ाम

मैं किस से इंतक़ाम लूं ?
ये सच है बेकसों के ख़ूं[1] से सुर्ख़ हो गई ज़मीं ,
मुसीबतों की दास्तां मैं सुन चुका हूं हमनशीं[2] ।
मैं सुन चुका हूं किस तरह बुज़ुर्गो-नातवान भी[3]
बिलखते शीरख़्वार[4] भी फ़सुर्दा[5] नौजवान भी ,
अजल[6] के घाट एक-एक करके सब उतर गये ।
घरों की शाहज़ादियां-हरीमे-नाज़ की मकीं[7]
(जो इफ़्फ़तें[8] गंवा चुकीं, जो अस्मतें[9] लुटा चुकीं)
भटक रही हैं दरबदर
बरहना पा, बरहना सर[10] ।
मैं सुन चुका हूं हमनशीं ये दास्ताने-दिल-ख़राश[11]।
मगर किसे मैं दोष दूं ?
मैं किस से इंतिकाम लूं ?
तबाहियों की गोद के पले हुए किसान से ?
कि जंगे इंक़िलाब के सिपाही, नौजवान से ?
ग़रीबो-नातुवान से ?
नहीं, नहीं !!

---

१. ख़ून। २. साथी। ३. बूढ़े और कमज़ोर भी। ४. दूध पीते बच्चे। ५. उदासीन। ६. मृत्यु। ७. लाड़ को चारदीवारी की निवासी। ८. ९. सतीत्व। १०. नंगे पैर नंगे सिर। ११. दिल को छीलने वाली कहानी।

ये सब मेरे अजीज[1] हैं, ये सब मुझे अजीज हैं[2]
मैं किस से इंतिक़ाम लूं ?
बता किसे मैं दोष दूं ?
चमन में किसने आग दी है मौसमे-वहार में
इक अजनबी सफ़ेद हाथ-आतशीं ओ-शोलावार[3]
फ़िज़ाए-तीरा-ए-वतन मे[4] रक्स[5] कर रहा है आज

१. सम्बंधी। २. प्रिय। ३. अग्नि वर्षक। ४. देश के अंधेरे वातावरण में
५. नृत्य।

मोड़

पसे-हिजाब[1] अभी तक हैं कितने नज़्ज़ारे,
उफ़क़[2] के पार हैं रक़्सां[3] हज़ार सइयारे[4]।
क़दम बढ़ा ज़रा जल्दी क़दम बढ़ा हमदम[5]
कि कारवाने-तमन्ना[6] है सुस्त गाम अभी[7],
जबीने-मेह पे[8] छाई है जुल्मतों की[9] गर्द
निगारे-सुबह में गलतां है[10] रंगे-शाम अभी।
बहारे-लाला-ओ-गुल है खिजां बदोश हनोज[11]
मजाक़े-बालो-परी है असीरे दाम अभी[12]।
हयात आज भी जहमत-कशे-हुदूदो-कुयूद[13]
ख़िरद[14] भी खाम[15] अभी है जुनूं[16] भी खाम अभी।
हज़ार सदियों ने छोड़े हैं रंगारंग नुक़ूश[17]
मगर फ़साना-ए-हस्ती[18] है नातमाम अभी।
नया जहान, नई जिंदगी, नया इन्सान,
जमीं पे करना है जन्नत का एहतिमाम[19] अभी।

---

१. पर्दे के पीछे। २. क्षितिज। ३. नृत्य करते हुए ४. नक्षत्र। ५. साथी। ६. मनोरथ रूपी कारवां। ७. मन्थरगति से चल रहा है। ८. सूर्य के माथे पर। ९. अंधेरो की। १०. सुबह के रंग में मिला हुआ है। ११. अभी वसन्त ऋतु के कांधे पर पतझड़ सवार है। १२. अभी बाल तथा पंख रखने का ज्ञान जाल में फंसा हुआ है। १३. जीवन आज भी विभिन्न सीमाओं में सीमित है। १४. मेधा। १५. अपक्व। १६. उन्माद। १७. चित्र, चिन्ह। १८. जीवन (अस्तित्व) की कहानी। १९. आयोजन।

जेल में किसी का खत पाकर

फ़स्ले-बहार[1] में भी असीरे-क़फस[2] हूं मैं,
गुलज़ार[3] की फ़िज़ा[4] को मेरा इन्तिजार है।
रंगे-फ़ेबकोश[5] को है मेरी जुस्तजू,
बूए-गुरेज़पा[6] को मेरा इन्तजार है।
तकते हैं मेरी राह ख्यावाने-कैफ खेज[7],
दस्ते-जुनूं फ़जा[8] को मेरा इन्तिजार है।
जैसे फ़सुर्दा[9] हो गई बज़्में-सदा-ओ-साज,[10]
याराने खुशनवा को[11] मेरा इन्तिजार है।
सूने पड़े हैं मिंबरो-महराबे-मैकदा[12],
रिंदाने-बासफ़ा[13] को मेरा इन्तजार है।
ऐ दोस्त ग़म के गहरे अंधेरे में आज भी,
इक अख़्तरे-वफ़ा[14] को मेरा इन्तिजार है।
ये और बात है कि वो मुंह से न कह सके,
उस पैकरे-हया[15] को मेरा इन्तिजार है।

---

१. वसंत ऋतु। २. पिंजरे में बंद। ३. बाग। ४. वातावरण। ५. वह रंग जो फरेब देने का यत्न करता है। ६. शीघ्र निकल जाने वाली सुगंधि। ७. आन्दोत्पादक बाग़। ८. उन्मादोत्पादक जंगल। ९. उदासीन। १०. संगीत सभा। ११. सुकण्ठ मित्रों को। १२. मधुशाला की महरावें और मिंबर (जो वास्तव में मस्जिद के होते हैं)। १३. निर्मल हृदय। १४. वफाओं के तारे (प्रेमिका) को। १५. लज्जा की मूर्ति।

है मेरे इन्तिजार में गेसूए-शाम खेज[1],
चश्मे सहरनुमा[2] को मेरा इन्तिजार है।
अब भी खुला है बाबे-हरम[3] मेरे वास्ते,
अब भी मेरे[4] खुदा को मेरा इन्तिजार है।

---

१. संध्या रूपी केश। २. सुबह रूपी आँख। ३. स्वर्ग का दरवाजा। ४. सभ्यता तथा विकास।

दीवाली

'वकार' रूह के तारों को क्यों छुआ तुम ने
तुम्हारी नज़्म 'दीवाली' बहुत ही अच्छी है,
मगर, ये रात की गर्दन में दीप-मालाएं
सियाहियों में उजाले के बदनुमा धब्बे,
ग़रीब हब्शी को जैसे जज़ाम[1] हो जाय,
ये टिमटिमाते दिये।
ये टिमटिमाते दिये सुबह का बदल तो नहीं,
मैं सोचता हूं कि इस रात चीनो-वर्मा मे
किसी महाज पे कितने दिये जले होंगे?
जवान खून की हर बूंद इक किरन बन कर
इक ऐसी सुबह की तशकील[2] कर रही होगी
हजार सदियों की तारीको तीरा[3] रातों में
बनी रही है जो इन्सां के ख्वाब का मरकज़[4]
वो सुबह दूर नहीं।
अंधेरी रात के सीने से नूर का चश्मा
उबलने वाला है।
ये टिमटिमाते दिये, लक्ष्मी के चरनों में
सभी ने हुस्ने-अक़ीदत[5] के फूल डाले हैं

---

१. कुष्ट रोग। २. विधामत। ३. अंधकारमय। ४. कोई।
५. श्रद्धा।

वो जिन को लक्ष्मी देवी से कुर्बे-खास[1] नहीं
घरों में अपने भी दीपक जलाये बैठे हैं,
शिकस्ता[2] झोंपड़ियों को सजाये बैठे हैं,
कि इस तरफ भी इनायत की इक नज़र हो जाय
मगर वे भूलते हैं।
शिकस्ता झोंपड़ियों, टूटे-फूटे खंडरों में
कभी भी लक्ष्मी देवी न मुस्कायेगी,
कभी बहार न इनके चमन में आयेगी
अगर वे खुद ही निजामे-चमन[3] न बदलेंगे।

सियाहियों के नुमाइंदे,[4] रात के बेटे
हमारे फिक्रो-तखइयुल[5] को बांधने के लिए
तवहुमात[6] की ज़ंजीरें डाल लेते हैं,
कभी दीवाली, कभी शब्बरात आती है।

---

१. विशेष सम्बन्ध। २. टूटी-फूटी। ३. बाग (संसार) की व्यवस्था
४. अंधेरों के प्रतिनिधि। ५. चिंतन तथा कल्पना। ६. भ्रमों की।

मिस्र[1]

कितनी सदियों से अबुलहौल पे तारी था जमूद[2],
जैसे अहराम के साये में पड़ा सोता था,
अहदे-हाजिर का[3] अबुलहौल, फ़रंगी जरदार[4],
वादीए-नील[5] में तखरीब[6] का बिस बोता था।

जिस तरह रूप भरे खिज्र[7] का कोई रहजन[8],
चेहरा-ए-जब्र पे[9] थी हुस्ने-तअल्लुक[10] की निक़ाब,
कितने यूसुफ़ बिके सरमाये के बाजारों में,
लुट गया कितनी जुलेखाओं का अनमोल शबाब।

आज इदराके-हक़ीक़त की मसीहाई से[11],
जो पड़ीं जज्बा-ए-मिल्ली[12] की ममी में जैसे,
जंगे-आजादी ने ऐ दोस्त किया है पैदा,
रब्ते-ताजा[13] अरबी और अजमी में[14] जैसे।

---

१. मिश्र देश। २. शैथिल्य। ३. वर्तमान काल का। ४. पूंजीपति। ५. नील की वादी (मिश्र देश)। ६. ध्वंस। ७. पथप्रदर्शक। ८. डाकू ९. दमन के चेहरे पर। १०. सुन्दर सम्बन्ध। ११. वास्तविकता के ज्ञान के चमत्कार से। १२. धर्म की भावना। १३. नया सम्बंध। १४. अरब निवासियों में और उनमें जो अरब निवासी नहीं हैं।

अब तहफ़्फ़ुज[1] के तराने हों कि इमदाद के राग,
"कोई जामा[2] हो छुपेगा नहीं क़द का अंदाज़",
गीत के बोल बदल जाने से क्या होता है?
वही अफ़रीत[3] का नग़मा वही इबलीस[4] का साज़।

साफ़ बतलाते हैं ये अहले-जुनूं के[5] तेवर,
सरनगूं[6] होने को है तौक़ो-सलासिल का निज़ाम[7],
मुंतिज़र नील है खोले हुए मौजों का किनार,
आज फ़िरऔन फ़रंगी है तो मूसा है अवाम[8]।

---

१ रक्षा। २. पहरावा ३. भूतपरेत। ४. शैतान। ५. उन्मत्त प्राणियों। ६. नतमस्तक। ७. फंदों तथा जंजीरों की व्यवस्था। ८. जनता।

निशाते सानिया[1]

रात जंजीरे-कहकशा[2] पहनाये
सुबहे-नौ[3] क़ैद हो नहीं सकती,
मौत सय्याद[4] बन तो सकती है
जिन्दगी सैद[5] हो नहीं सकती,
वक़्त के तुंदो-तेज़ धारे को
कौन हां कौन मोड़ सकता है?
रहरवे-शौक़[6] और मंजिल के
रब्त[7] को कौन तोड़ सकता है?
देख मशरिक़ के ख़ारज़ारों में[8]
रंगो-नकहत की कारफ़र्माई[9],
जो रहा मसकने-ख़जां[10] सदियों
उस गुलिस्तां में फिर बहार आई।
सुर्ख़ परचम के[11] फूल खिलते हैं,
खू शहीदों का रंग लाया है,
क़सरो-ऐवां[12] हैं बोम के[13] मसकन
झोपड़ों पर हुमा[14] का साया है,

१. पुनर्जन्म। २. आकाश गंगा की जंजीर। ३. नव-प्रभात। ४. अहेरी। ५. आखेट। ६. प्रेमार्ग के पथिक। ७ सम्बन्ध। ८. कंटीले क्षेत्रों में। ९. रंग तथा सुगन्धि की कार्यवाही। १०. पतझड़ का घर। ११. झंडे के। १२. महल। १३. उल्लू। १४. एक कल्पित पक्षी जिसे शुभ माना जाता है।

उनके हाथों में आज ताक़त है
जो ज़मीनो-ज़मां[1] के मालिक हैं,
ख़ून से अपने सींचने वाले
अस्ल में गुलिस्तां के मालिक हैं।
एक ताज़ा निज़ाम[2] आता है
हर मुदावा-ए-एहतियाज[3] लिए,
कारख़ानों में ढेर रेशम के
खेतियां झोलियों में नाज लिये,
मौत के सर्दो-तीरा[4] साये में
देख नक़्शे-बक़ा[5] उभरता है,
चीन और कोरिया के खंडहरों से
इक नया एशिया उभरता है।

१. धरती-आकाश। २. जीवन-व्यवस्था। ३. आवश्यकताओं ... [illegible]। ४. ठंडे तथा अंधकारमय। ५. स्थायी जीवन का रेखाचित्र।

याद

किसी की याद जब आई तो इस तरह आई,
अंधेरी रात में जैसे चिराग़ जल जायें।
वो उनकी ज़ुल्फ़े-मुअंबर[1] कि मुश्क नाब ख़जिल[2],
वो उनके आरिजे-रंगीं[3] कि फूल शर्मायें।
निगाह महरमे राजे-दरूने मैख़ाना[4],
उठे जो आंख तो साग़र छलक-छलक जायें।
लबों पे हाय तबस्सुम[5] की कारफ़रमाई,
शफ़क़[6] में बर्क़ की मौजें मचल मचल जाये।
गले का लोच हरीफ़ेन-वाए-चंगो-रबाब[7],
करें वो बात तराने फ़िज़ा में लहरायें।
शिकन जबीं[8] पे पड़े इंक़िलाब आ जाये,
निगाह बदले हवाओं के रुख़ बदल जायें।
अगरचे यूं तो निहायत मतीनों—संजीदा[9],
शरारतों पे जो आयें क़यामतें ढायें।
वो उनका तर्जे-तग़ाफ़ुल[10] कि इल्तिफ़ात निसार,
मुझे तलब न करें इन्तिज़ार फ़र्मायें।

---

१. ऐसे सुगन्धित केश कि कस्तूरी की महक लज्जित हो। २. रंगीन कपोल ३. नजर। ४. मधुशाला के भीतरी भेदों की भेदी है। ५. मुस्कान। ६. अंतरिक्ष में बिजली की लहरें। ७. जंग तथा रबाब नाम के बाजों के स्वर की प्रतिध्वनि। ८. माथा। ९. गम्भीर। १०. विमुखता का ऐसा ढंग कि जिस पर आकृष्टि न्योछावर की जा सकती है।

ये एहतियात का आलम कि इतने कमआमेज़[1]
क़रीब आयें तो कुछ और दूर हो जायें।
मेरे ख़याल को, मेरी नवा[2] को क़ैद करें,
और इस तसर्रुफ़े-बेजा पे[3] नाज़ फ़र्मायें।
वो मेरी ज़िद पे मेरे शेर गुनगुना देना,
चमन में जैसे बहारों के राग छिड़ जायें।
दमे-विदाअ[4] निगाहों का वो लतीफ़ पयाम[5],
तुम आना लौट के इक दिन जो हम न आपायें।

१. कम मिलने जुलने वाले। २. स्वर। ३. अनुचित अधिकार पर।
४. बिछुड़ते समय। ५. मधुर संदेश।

कुछ अपने मुतअल्लिक़

दयारे-जुहद[1] छोड़ा और मैख्वारों में आ पहुंचा,
गुनाहे-जीस्त[2] की ख़ातिर गुनहगारों में आ पहुंचा।
मेरे देरीना-हमदम[3] खूब थे पर ये हकीक़त है,
सवाबित से[4] गुजर कर आज सय्यारों में आ[5] आ पहुंचा।
गुलिस्तानों में रहता था ख़िजां के जौर[6] सहता था,
बयाबानों मे आ पहुँचा जुनूं जारों मे[7] आ पहुंचा।
शबिस्तानों के ख्वाब-आवर मनाजिर[8] कल की बातें थीं,
सहर के जांफिजा बेदार नज्ज़ारों में[9] आ पहुंचा।
जो तालिब है सुकूने-जिंदगी[10] उनको मुबारक हो,
हलाके-जुस्तजु[11] था मैं कि आवारों में आ पहुंचा।
नजर को ख़ीरा[12] कर सकती थी सीमो-जर की ताबानी[13],
नजर पलती है जिनमें ऐसे नज्ज़ारों में आ पहुंचा।
मैं बेगाना था यज़दां के[14] परस्तारों की महफ़िल में,
ग़नीमत है कि इन्सां के परस्तारों में आ पहुंचा।
उरूसे-ज़िंदगी की[15] नाजवरदारी का सौदा[16] था,
उरूसे ज़िंदगी के नाजवरदारों में आ पहुंचा।

---

१. संयम रूपी देश। २. जीवन रूपी पाप। ३. पुराने मित्र। ४. जड़ नक्षत्रों से। ५. गतिमान ग्रहों में। ६. अत्याचार। ७. उन्माद स्थलों में। ८. शयनागारों के तंद्रिल दृश्य। ९. प्रभात के प्राणोत्पादक जाग्रत दृश्यों में। १०. जीवन की शान्ति। ११. जिज्ञासा-पीड़ित। १२. चकित सोने चांदी की चमक। १४. खुदा के। १५. जीवन-रूपी नव-वधू की। १६. उन्माद।

अगर यह जिंदगी से प्यार भी इक जुर्म है फिर तो,
गुनहगारों में आ पहुंचा खतावारों में[1] आ पहुंचा।
भटकता फिर रहा था दर-ब-दर और कू-ब-कू[2] 'ताबां',
यह यारों का तसर्रुफ़[3] है कि मैं यारों में आ पहुंचा।

१. अपराधियों में। २. गली-गली। ३. देन, कृपा।

नज़्म एक

मानिन्दे - जामे[1] दौर में[2] 'तावां' रहे हैं हम,
यानी हरीफ़े-गर्दिशे-दौरां[3] रहे हैं हम।
किस-किस चमन में गूंजी हमारी नवा-ए-शौक़[4],
फूलों की अंजुमन में ग़ज़लख़्वां रहे हैं हम।
निकला है जब जुलूसे-बहारां चमन-चमन,
सर्वे-रवां[6] के साथ ख़िरामां[7] रहे हैं हम।
दौरे-ख़िज़ां[8] में [illegible] में,
नामूसे-गुलसितां के[10] निगहबां रहे हैं हम।
निकले हैं घर को छोड़ के [illegible] के साथ,
मेहमान-दश्तो-ख़ारे-मुग़ीलां रहे हैं हम।
क्या पूछते हो [illegible] की [illegible][11],
कांटों पे फ़र्शे-ख़्वाब से [illegible][12] रहे हैं हम।
तेरा भला हो [illegible] कि [illegible],
वाबस्ता - ए-[illegible] - [illegible] रहे हैं हम।

अक्सर किया है राहे - तरीक़त से इनहिराफ़[1],
अक्सर शरीके - महफ़िले - रिन्दां[2] रहे हैं हम।
शाहों को भी निगाह में लाते नहीं मगर,
ख़िदमतगुज़ारे - बादाफ़रोशां[3] रहे हैं हम।
जिस शब हुआ है चश्मा-ए-तसनीम[4] पर गुज़र,
उस रात एक हूर के मेहमां रहे हैं हम।
उस चश्मे - हीला - साज़ो - लबे - हीलागर[5] की ख़ैर,
आवारा - ए - तवारो - बदख़्शां[6] रहे हैं हम।
दैरो - हरम[7] की राह से गुज़रे तो बार-बार,
तंगी - ए रहगुज़र[8] से परीशां रहे हैं हम।
मक़सूद कुफ्रो[9] - हासिले - ईमां है ज़िन्दगी,
काफ़िर रहे है हम न मुसलमां रहे हम।
इल्मो - गुमां[10] पे तंग था जब अर्सा-ए-वुजूद[11],
वहमो - गुमां से दस्तो - गरेबां रहे हैं हम।
हर ताज़ा वारदात[12] से निसबत[13] हमें भी है,
हर ताज़ा इन्क़िलाब के उनवां[14] रहे हैं हम।

---

१. धर्म की अवज्ञा। २. मद्यपों की महफ़िल में शामिल। ३. शराब बेचने वालों के सेवक। ४. तसनीम (जन्नत की एक नदी) के चश्मे (मधुशाला) पर। ५. आँखों तथा होठों से बहाने करने वाली (प्रेमिका)। ६. तातार और बदख़्शां (प्राचीन तुर्किस्तान तथा अफ़ग़ानिस्तान) में (शहज़ादों की तरह) आवारा फिरने वाले। ७. मन्दिर, मस्जिद। ८. मार्ग की तंगी। ९. हमारे जीवन का उद्देश्य कुफ़ (अधर्म) और ईमान (धर्म) की प्राप्ति है। १०. ज्ञान तथा संदेह। ११. अस्तित्व का मैदान। १२. नई घटना। १३. संबंध। १४. शीर्षक।

अल पत्थर

रास्ता आइना - दारे - बरहमीए - जुल्फ़े - दोस्त ,
कोह् के संगीन शानों पर पड़ा था खम बखम ,
यक तरफ इतनी बुलंदी, यक तरफ इतना नशेब[२] ,
पत्थरों में ढल गया था जिंदगी का ज़ेरो-बम[३] ।

जैसे साजिश कर रहे थे अब्रो-बादो-संगो-खार[४] ,
इम्तिहाने - जुर्रते - नाआजमूदाकार था[५] ,
उस तरफ़ फ़ितरत मुजाहिम इस तरफ अज्मे-तमाम[७] ,
हर नफ़स[८] इक जहद[९] था हर गाम[१०] इक पैकार[११] था ।

जितनी उफ़तादें[१२] पड़ीं सोजे-तलब बढ़ता गया ,
शौक़ को हर मरहला इक ताजियाना[१३] हो गया ,
लाख फ़ितरत ने छुपाया आदमी से अपना राज़ ,
फिर भी वो सैदे-निगाहे-आरिफाना[१४] हो गया ।

---

१. मार्ग मानो प्रेमिका के बिखरे केशों-का प्रतीक (बना) पर्वत के पत्थरीले कंधों पर पेच दर पेच पड़ा था। २ गहराई। ३. ऊंच-नीच। ४. बादल, वायु, पत्थर, काटे। ५. अनुभवहीन व्यक्ति के साहस की परीक्षा थी। ६. प्रकृति बाधक थी। ७. दृढ संकल्प। ८. श्वांस। ९. चेष्टा। १०. पग। ११. संग्राम। १२. कठिनाइयां। १३. कोड़ा। १४. ज्ञाता की नजरों का आखेट।

दामने - कुहसार पर[1] रंगे - खिजां की आबो - ताब ,
जिसके आगे सरनिगूं[2] बहज़ादो-मानी के क़लम[3] ,
आज़रे-फ़र्दा की[4] चाबुक दस्तियों के मुंतज़िर ,
एक एक पत्थर में कितने नातराशीदा सनम[5] ।
बर्फ़ का टीका दमकता था जबीने-कोह पर[6] ,
बादलों के दोश पर[7] गेसू[8] थे लहराये हुए ,
जिन की आराइशों में महव[9] हो जैसे कोई ,
इश्क की तसखीर[10] के जज्बों की थाह पाये हुए ।
झील की ठंडी हवायें गुदगुदाती, छेड़ती ,
तेज झोंका जब कोई आ जाये पानी मुस्कराए ,
शोरिशे-हर मौज में ग़लतां हजारों जमजमें[11] ,
जैसे मांझी रात को झेलम किनारे गीत गाये ।
ये मनाज़िर जिनका परतौ[12] है मेरा जौके-जमाल[13] ,
इन को मेरे फ़िक्र की[14] मश्शातगी[15] दरकार है ,
जान सी पड़ जाय इन रंगीन नज़्ज़ारों में आज ,
इक ज़रा सोज़ो-गुदाज़े-ज़िंदगी[16] दरकार है ।

---

१. पर्वतमालाके अंचल पर। २. नतमस्तक। ३, इरान के दो प्रसिद्ध चित्रकार। ४. आने वाले आज़र (हज्ज़त इब्राहीम के चचा का नाम जो मूर्तिकार थे) की। ५. अनघड़ मूर्तियां। ६. पर्वत के माथे पर ७. कंधे पर। ८. केश। ९. शृंगार में लीन। १०. वशीकरण। ११. हर उत्तेजित लहर में हज़ारों राग डूबे हुए। १२. प्रतिरूप। १३. सौंदर्य की अनुभूति। १४. चिंतन। १५. बनाव-शृंगार। १६. जीवन का माधुर्य।

रौशन हैं बज़्मे - दह्‌ में मिस्ले - चिराग़े - तूर[1],
ये और बात है तहे - दामां[2] रहे हैं हम।

---

१. हम तूर (एक पहाड़ी का नाम जिस पर हज़रत मूसा ने ख़ुदा से बातें की थीं) के दीपक की तरह संसार में प्रकाशमान हैं। २. (पहाड़ी के) दामन तले।

नज़्म दो

सर - ताव - क़दम[1] एक हुसा-राज़[2] का आलम[3]।
क्या कहिए किसी फ़ितनागरे - नाज़[4] का आलम ?
ज़ुल्फ़ों में वो बरसात की रातों की जवानी,
आरिज़[5] में वो अनवारे - सहर - साज़[6] का आलम।
उनवाने - सख़ुन[7]—'ग़ालिबो' - ''मोमिन' का तग़ज़्ज़ुल[8],
अन्दाज़े - नज़र[9]—बादा - ए - शीराज़[10] का आलम।
दुज़दीदा निगाहों में[11] इक इलहाम[12] की दुनिया,
नाज़ुक से तबस्सुम[13] में इक एजाज़[14] का आलम।
हर जुंबिशे - अबरू[15] में महाकात[16] के दफ़्तर,
कुछ सोज़ का आलम है तो कुछ साज़ का आलम।
उलझे हुए जुमलों में शरारत भी हया[17] भी,
जज़्बात में डूबा हुआ आवाज़ का आलम।
इस सादगी ए हुस्न में किस दर्जा कशिश[18] है,
हर नाज़ में इक जज़्बा ए ग़म्माज़[19] का आलम।

---

१. सिर से पाँव तक। २. सुन्दर भेद। ३. स्थिति। ४. जो अपने नाज़ और अदा से उपद्रव पैदा कर दे। ५. कपोलों में। ६. प्रभात का प्रकाश। ७. शायरी का शीर्षक। ८. काव्यमयता। ९. देखने का अन्दाज़। १०. ईरानी शराब। ११. चोर नजरों में (कटाक्ष)। १२. ईश्वरीय संकेत। १३. मुस्कान। १४. चमत्कार। १५. भृकुटी के प्रत्येक स्पन्दन में। १६. वार्तालाप। १७. संकोच। १८. आकर्षण। १९. संकेत की भावना।

उस सैद[1] को क्या कहिए जो खुद आये तहे दाम[2],
दिल में लिए इक हसरते परवाज़[3] का आलम।
क़ुर्बत[4] भी है दूरी भी है, अब क्या कोई समझे,
अंजाम का आलम है कि आगाज़[5] का आलम।
यूं तो न तसाहुल[6] न तजाहुल[7] न तग़ाफ़ुल[8],
कुछ और है इस काफ़िरे तन्नाज़[9] का आलम।
शोख़ी में, शरारत में, मतानत[10] में, हया में,
जो राज़ का आलम था वही राज़ का आलम।

---

१. आखेट। २. जाल में। ३. उड़न की अभिलाषा। ४. सामीप्य। ५. शुरुआत। ६. उदासीनता। ७. अज्ञानता। ८. उपेक्षा। ९. चंचल प्रेमिका। १०. गंभीरता।

नज़्म तीन

ये हुक्म बारगहे इश्क़ से[1] मिला 'ताबां'
फ़रेबे लुत्फ़ न खा[2] उसकी अंजुमन[3] से गुज़र।
दिलों का सोज़, नवाओं को[4] साज़ देता है,
जहां खुलूस न हो मिन्नते-सखुन[5] से गुज़र।
वफ़ा की बू है गुलों में[6] न एतबार का रंग,
असीर वहमे बहारां[7] न हो चमन से गुज़र।
ज़रा उठा तो ज़माने की तेज़ धूप का लुत्फ़,
गुज़र भी - साया - ए गेसुए पुरशिकन से[8] गुज़र।
कहां नसीब चमन में फ़राग़ते सहरा[9],
जुनूं में[10] सोहबते - नसरीनो - नस्तरन से [11] गुज़र।
ये मौत है कि तू इक आस्तां[12] का हो जाये,
वो ज़िन्दगी है कि हर दश्त और दमन से गुज़र।
यही ख़ायते किनआने इश्क़[14] है ऐ दोस्त,
कि आजमाइशे सद-बू-ए पैरहन से[15] गुज़र।

---

१. प्रेम के सभास्थल से। २. प्रेम रूपी धोखा। ३. महफ़िल। ४. स्वर को। ५. बातचीत करना। ६. फूलों में। ७. बसन्त के भ्रम में ग्रस्त। ८. (प्रेमिका के) उलझे केशों की छाया से। ९. मरुस्थल की सी निवृत्ति। १०. उन्माद में। ११. फूलों (के नाम) के सहवास से। १२. चौखट। १३. जंगलों से। १३. प्रेम के नगर की परम्परा। १४. (प्रेमिका के) वस्त्रों की सैकड़ों सुगंधियों के अनुभव से।

फ़िराक़े दोस्त तबीयत[1] न हो तो इश्क़ न कर,
न आये खुश रमे आहू[2] तो फिर खतन[3] से गुज़र।
छुपा है दामने गिरदाब[4] में दुरे हासिल[5],
किनारे मौज[6] में आ साहिले यमन[7] से गुज़र।
न हो कहीं तिरा पिंदारे आशिक़ी मजरूह[8],
फ़ुगानें शौक़[9] की रस्मो रहे कुहन[10] से गुज़र।
मुक़ामे हिज्र[11] हो या मंज़िले विसाले हबीब[12],
जहां कहीं से गुज़र एक बांकपन से गुज़र।

---

१. प्रेमिका विछोह को सहनशीलता। २. हिरन का भागना। ३. खतन एक क्षेत्र जहां के हिरन मशहूर हैं। ४. भंवर के दामन में। ५. लक्ष रूपी मोती। ६. लहरों के बीच। ७. यमन के तट। ८. प्रेम करने का गौरव घायल न हो। ९. प्रेम में (विफल होने पर) विलाप करना। १०. पुरानी रीति। ११. विछोह रूपी मार्ग। १२. प्रेमिका से मिलने की मंज़िल।

क़तआ

नहीं हैं लब मेरे आलूदा ए आहो फ़ुग़ां[1] 'ताबां',
असर की बात क्यों पहुँचे ख़ुदावंदाने[2] दिल्ली तक।
बहुत है फ़ासला यानी ख़लायें[3] ही ख़लायें हैं,
जमीं गरदाने दिल्ली से फ़लक ताज़ाने दिल्ली तक[4]।
ये माना हम अभी आवारा ए कू-ए-मलामत[5] हैं,
ख़ुदा के फ़ज़्ल से पहुँचे हैं वो ऐवाने दिल्ली तक।
वो बेचारे मगर पेंचो ख़मे सहरा से[6] क्या वाकिफ़,
नजर महदूद[7] है जिनकी चमन ज़ाराने दिल्ली तक[8]।
मयस्सर सुहबतें अह्ले जुनूं[9] की है तो गम क्या है?
रसाई गर नहीं अपनी ख़िरदमंदाने दिल्ली तक[10]।
निशाना बन नहीं सकता ये दिल सोने के तीरों का,
मेरा पैग़ाम पहुँचा दो कमांदाराने-दिल्ली[11] तक।
'जबां उनकी है तुर्की और मैं तुर्की मे नावाकिफ़"
पहुँच मेरी हो कैसे महफ़िले तुर्काने-दिल्ली तक?

---

१. मेरे होंट आर्तनाद से मल्युक्त। २. स्वामी। ३. शून्य। ४. दिल्ली की धरती से दिल्ली के आकाश तक। ५. भर्त्सना रूपी गली में आवारा फिरने वाले। ६. मरुस्थल के उल्झे रास्तों मे। ७. सीमित। ८. दिल्ली के बागो तक। ९. उन्मत्त व्यक्तियों का संग। १०. दिल्ली के बुद्धिजीवों तक। ११. दिल्ली के कमानदार।

मुसाहिब[१] बन के कोई खिदमते-फ़न[२] कर नहीं सकता,
मेरी आवाज जाये काश फ़नकाराने-दिल्ली तक[३]।
"नवारा तल्ख तरमीजन चू जौके-नग़मा काम्याबी[४]"
ये पैग़ामे-जुनूं[५] पहुंचे नवासंजाने-दिल्ली[६] तक।
अगर मैं अक्ल की सुनता खुदा जाने कहां होता,
जुनूने-शौक़ लाया खेंच कर याराने-दिल्ली तक।

---

१. प्रशंसक । २. कला की सेवा। ३. दिल्ली के कलाकारों तक । ४. अगर गीत में स्वाद न मिलता हो तो और कड़वे गीत गाओ । ५. उन्माद का संदेश । ६. गाने वाले ।

याद रहेगी

ज़ालिम वो तेरी पहली नज़र याद रहेगी,
मैं भूलना चाहूँ भी मगर याद रहेगी।
इक क़ातिलो-मासूम अदा नक्श[1] है दिल पर,
इक सादा-ओ-पुरकार नज़र याद रहेगी।
होंटों से छलकता हुआ नाज़ुक सा तबस्सुम,
ताबिंदगी - ए - सिलके - गुहर[2] याद रहेगी।
बरसात का भरपूर समां याद रहेगा,
ज़ुल्फ़ों की घटा तावा क़मर[3] याद रहेगी।
आराइशे - ज़ेबाईशे जन्नत के नज़ारे[4],
आसूदगी - ए - ज़ौक़े - नज़र[5] याद रहेगी।
तजदीदे - मराआत के[6] दिलचस्प बहाने,
हर "पुरसिशे - ग़म बारे - दिगर"[7] याद रहेगी।
वो इश्क़ का मौसम, वो बहारों का ज़माना,
बालीदगी - ए - कैफ़ो - असर[8] याद रहेगी।
हर रोज़ मनाते थे जहाँ जश्ने - मुलाक़ात,
वो राहगुज़र, राहगुज़र याद रहेगी।
गुलगश्ते - चमन[9], साहिले - गंगा के नज़ारे;

---

१. अंकित। २. मोतियों की लड़ी की चमक। ३. कमर तक।
४. स्वर्ग की सज्जा के ५. नज़र की तृप्ति। ६. कृपाओं के नवीनीकरण के।
७. दो बार इश्क़ का हाल पूछना। ८. आनन्द की वृद्धि। ९. बाग के फूलों की सैर।

आवारगी - ए शामो - सहर[१] याद रहेगी।
आजुर्दगी - ए - शौक़[२] पे इक खास अदा से,
तसकीं व इशाराते - नजर[३] याद रहेगी।
जुलमत कदा- ए - ग़म में[४] जलाई थी जो तूने,
हर सूद[५] में वो शम्मे - जरर[६] याद रहेगी।
पाबंदी - ए - आदाबे मुहब्बत[७] पे वो इसरार,
फहमाइशे - दुजदीदा नजर[८] याद रहेगी।
दिल अपनी हज़ीमत[९] को तो अब भूल चला है,
हां दोस्त तेरी फ़तहो जफर[१०] याद रहेगी।
जिस शाम मुझे तर्के मुहब्बत का[११] मिला हुक्म,
वह शाम ब उनवाने दिगर[१२] याद रहेगी।
गो छूट चुका मुझ से गुलिस्ताने फ़तहगढ़[१३],
ता उम्र[१४] तेरी ऐ गुले तर[१५] याद रहेगी।

---

१. सुबह शाम की आवारगी। २. खिन्नता। ३. नजर के संकेत में ढाढ़स देना। ४. दुख रूपी अंधेरे घर मे। ५. लाभ। ६. नुकसान का दीपक। ७. प्रेम की परम्पराओं की पाबन्दी। ८. चोर नजरों की चेतावनी। ९. हार। १०. महान् विजय। ११. प्रेम करने से बाज आने का। १२. किसी अन्य शीर्षक से। १३. कवि अपने शहर फतेहगढ़ को बाग कहता है। १४. आयु भर। १५. सजल फूल।

ग़ज़ल एक

चमन वालों में इदराके-नमू[1] बढ़ता ही जाता है,
मुबारिक हो रिवाजे-रंगो-बू[2] बढ़ता ही जाता है।
सलासिल[3] भी हैं जिन्दां[4] भी हैं दीवानों की राहों में,
मगर ऐ दोस्त शोरे-हाये-हू बढ़ता ही जाता है।
ये मंज़िल की कशिश[5] है या फ़ज़ूरे-जादा पैमाई[6] ?
बहर मुश्किल[7] मज़ाके-जुस्तजू[8] बढ़ता ही जाता है।
हुज़ूरे-मुहतसिब[9] रिन्दों की[10] बेबाकी कोई देखे,
जवाबन[11] हल्का-ए-जामो-सुबू[12] बढ़ता ही जाता है।
शुमारे-दुश्मनो-दोस्तां[13] कैसा आज तो 'साथी',
बहर सूरत[14] गुरेज़े-आरज़ू[15] बढ़ता ही जाता है,
मेरी बादा कशी[16] मर्दे-हरम[17] है साकी,
गिरह वालों को[18] महफ़िल में जुनूं[19] बदनाम है साकी।

ख़ुदा जाने तिरे रिंदों पे[1] क्या गुज़री कि महफ़िल में,
न साज़ो-मीना है साक़ी, न रक़्से जाम[2] है साक़ी।
जुनूं में और खिरद मे दरहक़ीक़त फ़र्क़ इतना है,
ये ज़ेरे-दार[3] है साक़ी, वो ज़ेरे-दाम[4] है साक़ी।
अभी तो चंद क़तरे ही मिले हैं तशनाकामों[5] को,
मगर पीरे-मुग़ां की बज़्म में कोहराम है साक़ी।
सुए-मंज़िल[6] बढ़ा जाता हूँ मैख़ाना ब मैख़ाना,
मज़ाक़े-जुस्तुजू तशना लबी[7] का नाम है साक़ी।
निज़ामे-तशनाकामी[8] अब ज़्यादा चल नहीं सकता,
कि जो मैख़ाना परवर[9] है उसी का जाम है साक़ी।
अभी सूदो-ज़ियां[10] का कुछ-न-कुछ एहसास बाक़ी है,
जुनूं के हाथ में अब तक खिरद का जाम है साक़ी।
कभी दो चार क़तरे भी सलीक़े से न पी पाये,
वो रिंदे-ख़ाम[11] हैं साक़ी, वो नंगे-जाम हैं साक़ी।
नहीं है आज भी शाइस्ता-ए-आदाबे-मैनोशी[12],
वो इक रिंदे-बलाकश[13] जिसका 'ताबां' नाम है साक़ी।

१. मद्यपों पर। २. प्याले का नृत्य। ३. फांसी तले। ४. जाल तले। ५. प्यासों को। ६. मंजिल की ओर। ७. प्यास। ८. प्यासा रखने की व्यवस्था। ९. मधुशाला का पला हुआ। १०. लाभ तथा हानि। ११. प्याले के लिए लज्जा। १२. शराब पीने की शिष्टता से अनभिज्ञ। १३. बहुत ज्यादा शराब पीने वाला।

ग़ज़ल एक

चमन वालों में इदराके-नमू[1] बढ़ता ही जाता है,
मुबारिक हो रिवाजे-रंगो-बू[2] बढ़ता ही जाता है।
सलासिल[3] भी हैं जिन्दां[4] भी हैं दीवानों की राहों में,
मगर ऐ दोस्त शोरे-हाये-हू बढ़ता ही जाता है।
ये मंजिल की कशिश[5] है या शऊरे-जादा पैमाई[6] ?
बहर मुश्किल[7] मज़ाक़े-जुस्तुजू[8] बढ़ता ही जाता है।
हुज़ूरे-मुहतसिब[9] रिन्दों की[10] बेबाकी कोई देखे,
जवाबन[11] हल्क़ा-ए-जामो-सुबू[12] बढ़ता ही जाता है।
ख़ुमारे-हसरते-दोशीना[13] कैसा आज तो 'तांबां',
बहर जुरअ[14] सुरुरेआरज़ू[15] बढ़ता ही जाता है,
मेरी बादा परस्ती[16] मूर्दे-इल्ज़ाम[17] है साक़ी,
खि़रद वालों की[18] महफ़िल में जुनूं[19] बदनाम है साक़ी।

---

१. विकास का ज्ञान। २. रंग तथा सुगंधि की रीति। ३. जंजीरें। ४. जेलखाना। ५. आकर्षण। ६. अनदेखी राहों पर चलने की अनुभूति। ७. हर कठिनाई में भी। ८. तलाश की अनुभूति। ९. आलोचक। १०. मद्यपों की। ११. उत्तर में। १२. सुराही और प्याले का घेरा (मद्यपों की संख्या)। १३. पिछली रात की अभिलाषा का खुमार। १४. हर घूंट के साथ। १५. आकांक्षा का सरूर। १६. शराब की पूजा। १७. दूषित। १८. बुद्धिजीवों की। १९. उन्माद।

ख़ुदा जाने तिरे रिंदों पे[1] क्या गुज़री कि महफ़िल में,
न साज़ो-मीना है साक़ी, न रक़्से जाम[2] है साक़ी।
जुनूं में और खिरद मे दरहक़ीक़त फ़र्क़ इतना है,
ये ज़ेर-दार[3] है साक़ी, वो ज़ेरे-दाम[4] है साक़ी।
अभी तो चंद क़तरे ही मिले हैं तशनाकामों[5] को,
मगर पीरे-मुग़ां की बज़्म में कोहराम है साक़ी।
सुए-मंज़िल[6] बढ़ा जाता है मैख़ाना ब मैख़ाना,
मज़ाके-जुस्तुजू तशना लबों[7] का नाम है साक़ी।
निज़ामे-तशनाकामी[8] अब ज़्यादा चल नहीं सकता,
कि जो मैख़ाना पख़र[9] है उसी का जाम है साक़ी।
अभी सूदो-ज़ियां[10] का कुछ-न-कुछ एहसास बाक़ी है,
जुनूं के हाथ में अब तक ख़िरद का जाम है साक़ी।
कभी दो चार क़तरे भी सलीक़े से न पी पाये,
वो रिंदे-ख़ाम[11] हैं साक़ी वो नंगे-जाम हैं साक़ी।
नहीं है आज भी शाइस्ता-ए-आदाबे-मैनोशी[12],
वो इक रिंदे-बलाकश[13] जिसका 'ताबां' नाम है साक़ी।

---

१. मद्यपों पर। २. प्याले का नृत्य। ३. फांसी तले। ४. जाल तले। ५. प्यासों को। ६. मंजिल की ओर। ७. प्यासे। ८. प्यासा रखने की व्यवस्था। ९. मधुशाला का पला हुआ। १०. लाभ तथा हानि। ११. प्याले के लिए लज्जा। १२. शराब पीने की शिष्टता से अनभिज्ञ। १३. बहुत ज्यादा शराब पीने वाला।

दो

जल्वा पाबंदे-नज़र[1] भी है नज़र साज़[2] भी है,
पर्दा-ए-राज़[3] भी है पर्दा-दरे-राज़[4] भी है।
हमनफ़स[5] आग न लगे जाए कहीं महफ़िल में,
शोला-ए-साज़ भी है, शोला-ए-आवाज़ भी है।
यूं भी होता है मुदावा-ए-ग़मे-महरूमी[6],
जब्रे-सय्याद[7] भी है हसरते-परवाज़[8] भी है।
मेरे अफ़कार की रानाइयां[9] तेरे दम से,
मेरी आवाज़ में शामिल तेरी आवाज़ भी है।
मैं तो अंजाम की तल्ख़ी भी गवारा कर लूं,
हाय इस दर्द में कुछ लज़्ज़ते-आग़ाज़[10] भी है।
ज़िन्दगी ज़ौक़े-नमू,[11] ज़ौक़-तलब,[12] ज़ौक़-सफ़र[13],
अंजुमन साज़[14] भी है, गर्मे-तगो-ताज़[15] भी है।
मेरे अफ़कारो-ख़्यालात में जारी 'ताबां'
हुस्ने-दिल्ली भी है रानाई-ए-शीराज़[16] भी है।

---

१. दृष्टि का आबद्ध। २. दृष्टि का उत्पादक। ३. भेद का पर्दा। ४. भेद का पर्दा उठाने वाला। ५. साथी। ६. वंचित के दुख का इलाज। ७. आखेटक का अत्याचार। ८. उड़ने की अभिलाषा। ९. रचनाओं की सुन्दरता। १०. शुरू-शुरू का आनन्द। ११. विकास की प्रवृत्ति। १२. पाने की प्रवृत्ति। १३. यात्रा की प्रवृत्ति। १४. सभा की जन्मदाता। १५. भाग दौड़ में व्यस्त। १६. ईरान की सुन्दरता।

जुनूँ[1] खुदनुमा[2] खुद निगर[3] भी नहीं,
खिरद[4] की तरह कम नज़र भी नहीं।
कोई राहज़न[5] का खतर भी नहीं,
कि दामन में गर्दे-सफ़र भी नहीं।
यहाँ होशो इमां सभी लुट गये,
मजा यह है उनको खबर भी नहीं।
गमे जिंदगी इक मुसलसल अज़ाब,
गमे जिंदगी से सफ़र[6] भी नहीं।
नज़र मोतबर है खबर मोतबर,
मगर इस क़दर मोतबर भी नहीं।
तेरी अंजुमन मरकज़े आरजू,
तिरी अंजुमन में गुजर भी नहीं।
कहां जाये 'ताबां' गुनहगारे शौक़[7]?
जफ़ा भी नहीं दरगुजर भी नहीं।
कूचा-ए-शौक़[8] रहे-फ़िक्रो-नज़र[8] से गुजरे,
नक़्शे-पा[9] छोड़ गये हम तो जिधर से गुजरे।
आज ऐ वहशते-दिल जाने किधर से गुजरे।
कितने दिलचस्प थे मंज़र जो नज़र से गुजरे?
हम भी मस्जिद के इरादे से चले थे लेकिन,
मैकदे राह में हायल थे जिधर से गुजरे।

---

१. उन्माद। २. आत्मप्रदर्शक। ३. स्वाश्रित। ४. बुद्धि। ५. डाकू। ६. प्रेम का अपराधी। ७. प्रेम रूपी प्याली। ८. देखने तथा सोने के मार्ग से। ९. पदचिन्ह।

ये वो मंजिल है कि इलियास[1] भी गुम खिज्र[1] भी गुम,
हाय आवारगी-ए-शौक किधर से गुजरे?
कितनी अमवाजे-बला[2] पाओं की जंजीर बनी,
कितने तूफाने-हवादिस[3] थे कि सर से गुजरे।
जाहिदो-शेख[4] में क्या-क्या न हुई सरगोशी,
मैकदे जाते हुए हम जो उधर से गुजरे।
आज 'ताबां' दिले-मरहूम[5] बहुत याद आया,
बाद मुद्दत के जब उस राह गुजर से गुजरे।
कम निगाही[6] न सही गर्म निगाही[7] होगी,
इश्क में दिल की बहर हाल तबाही होगी।
कैसे झुटलाओगे तारीख को तुम रोजे-हिसाब[8]
फ़र्दे-इसियां[9] पे जमाने की गवाही होगी।
फ़ैजे-मैखाना[10] अभी आम नहीं है वरना,
कौन है जिसने मै-ए-नाब न चाही होगी?
जिसपे औहामो-जहालत के[11] पड़े हों पर्दे,
मोतबर, खाक वो महदूद निगाही[12] होगी।
इंक़लाबात की मंजिल है खिजर[13] से कह दो,
अब जुनूं राहनुमा[14] जिंदगी राही होगी।
हम ने हर हाल में उस दुश्मने जां से 'ताबां'
यूं निबाही कि किसी ने न निबाही होगी।

---

१. पैगम्बरों के नाम (पथ प्रदर्शक) २. विपत्तियों की लहरें ३. विपत्तियों के तूफान। ४. धर्मोपदेशक। ५. मृत हृदय। ६. अल्प दृष्टि। ७. गुस्से से देखना। ८. प्रलय के दिन जब भगवान सब का लेखा-जोखा लेगा। ९. वह कागज जिस पर तुम्हारे पाप लिखे होंगे। १०. मधुशाला की उदारता। ११. भ्रम तथा अज्ञानता के। १२. सीमित दृष्टि। १३. राह दिखाने वाले पैगम्बर का नाम। १४. उन्माद राह दिखायेगा।

तीन

अपने तो फिर अपने हैं ग़ैरों का चलन बदला।
अंदाज़े नज़र बदला, उनवाने-सुख़न[1] बदला।
दीवाने तो दीवाने खोये गये फ़रज़ाने[2],
यूँ फ़स्ले बहार आई यूँ रंगे-चमन बदला।
फिर दौर में सागर है फिर मौज में सहबा[3] है,
मैख़ाना-ए-मशरिक़ का दस्तूरे कुहन[4] बदला।
ऐ अहले चमन[5] मुज़दा[6] सय्याद[7] हुए रुख़सत,
तक़दीरे-चमन बदली, आईने चमन[8] बदला।
जो क़तरा है मोती है जो ज़र्रा है नाफ़ा[9] है,
दस्तूरे-अदन बदला, आईने-ख़ुतन[10] बदला।
इरफ़ाने-जुनूँ[11] पाया या राज़े-नमू[12] पाया,
मएयारे-नज़र[13] बदला हर नक़्शे-कुहन[14] बदला।
मग़रिब का सितारा अब गर्दिश में है ऐ 'ताबाँ',
वो अपनी रविश बदले, दुनिया का चलन[15] बदला।

---

१. बातचीत (कविता) का शीर्षक (ढंग)। २. बुद्धिजीवी। ३. लाल शराब। ४. पुरानी रीति। ५. बाग़ के रहने वाले। ६. मंगल सूचना। ७. आखेटक। ८. बाग़ की व्यवस्था। ९. कस्तूरी। १०. मध्य एशिया की व्यवस्था। ११. उन्माद का ज्ञान। १२. विकास का भेद। १३ दृष्टिकोण। १४. पुराना रूप। १५. चाल चलन।

शवावे-हुस्न है वर्को-शरर[1] की मंजिल है
ये आज़माइशे-क़ल्बो-नजर की[2] मंजिल है।
सवादे वर्को-शरर[3] भी वशर[4] की मंज़िल है,
अभी. तो पर परवरिशेवालो की[5] मंजिल है।
कदम बढ़ाये हुए शव नसीव[6] हम सफ़रो,
वहुत करोव निगारेसहर[7] की मंजिल है।
ये मैकदा है कलीसा-ओ खानकाह[8]. नहीं।
उरुजेफिक्रो-फरोगे नजर की[9] मंजिल है।
हमें तो एक ही आई फुग़ा की वे असरी[10],
मगर बताओ तो कोई असर की मंजिल है।
वो रहबरी-ए-जनावे खिजर को[11] मंज़िल थी,
ये रहनुमाई-ए-फिक्रे वशर को[12] मंज़िल है।
ये राज पा न सके साहिबा-ने-होशों खिरद,
जुनूं भी इक निगहे-पर्दा दर की मंज़िल है।
श्याम शामिले मश्के-खराम है[13] तांवां,
सफर का तर्क भी गोया सफ़र की मंजिल है।

---

१. बिजली और चिंगारी की। २. दिल तथा दृष्टि की परीक्षा की। ३. बिजली और चिंगारी के आस पास। ४. मनुष्य। ५. बालों और परों के। ६. जिनके भाग्य में रात थी। ७. सुबह की मूर्ति। ८. गिरजा या संन्यासियों का मठ। ९. सोचने तथा देखने के उत्थान की। १०. प्रभावहीनता। ११. पैगम्बर (पथ-प्रदर्शक) महोदय के पथ-प्रदर्शन की। १२. मनुष्य के चिंतात्मक पथ-प्रदर्शन की। १३. रुकना भी चलने के अभ्यास का अंग है।

चार

हुज्वे-मय रस्मो-रहे-दुनिया[1] की पाबंदी भी है,
गालिबन कुछ शेख को जोमे-खिरदमंदी[2] भी है।
बिजलियों से साजिशें भी कर रहा है बागबां,
हम चमन वालों को हुक्मे आशियाबंदी[3] भी है।
हज़रते-दिल को खुदा रक्खे वही हैं शोरिशें[4],
दर्दे-महकूमी[5] भी सोजे-आरजूमन्दी[6] भी है।
मैकदे की इस्तलाहें[7] भी बहुत कुछ कह गये,
वरना इस महफ़िल में दस्तूरे-जुबांबंदी[8] भी है।
उनके जलवों की फ़ुसूंकारी[9] मुसल्लम[10] है मगर,
कुछ निगाहे-शौक की इसमें हुनरमन्दी भी है।
उस ने 'ताबां' कर दिया आजाद ये कह कर कि जा,
तेरी आजादी में इक शाने नजरबंदी भी है।

---

१. शराब की बुराई, संसार की नीति। २. बुद्धिमत्ता का अभिमान। ३. घोंसला बनाने की आशा। ४. उपद्रव। ५. पराधीनता की पीड़ा (दुख) ६. इच्छापूर्ति की जलन। ७. परिभाषायें। ८. जबान न खोलने की रीति ९. जादू। १०. मानी हुई।

पाँच

भर आई आंख तो अक्सर किसी के नाम के साथ,
मगर वो अश्क[1] जो छलका किये हैं जाम के साथ।
फ़रोग़े-जलवा-ए-साक़ी, फ़रोग़े जाम के[2] साथ,
चिराग़ जलते हैं किस हुस्ने-एहतिमाम[3] के साथ।
महे-तमाम को[4] बातें महे-तमाम के साथ,
वो रात होगई मनसूब[5] उन के नाम के साथ।
कफ़स में[6] रह के भी अक्सर बहार का दामन,
नज़र से चूम लिया हमने एहतिराम के साथ।
चमन पे साया-ए-अब्रे-बहार[7] क्या कहिये,
यो जुल्फ़ रुख़ पे[8] बिखरती है इलतिज़ाम के साथ[9]।
वफ़ा तो दौलते-नामूसे-दिल[10] लुटा बैठी,
हवस को[11] रब्त[12] मुबारक हो नंगो-नाम[13] के साथ।
कोई समझ न सका राज़े-दिलबरी 'ताबां',
ये लुत्फ़े-ख़ास[14] है इक शाने-इन्तिक़ाम के[15] साथ।

---

१. आसू। २ फरोगे जाम। ३. सुन्दर ढंग से। ४. पूरे चांद की। ५. सम्बन्धित। ६. पिजड़े में। ७. बसन्त ऋतु के बादल की छाया। ८. चेहरे पर केश। ९. अनिवार्य रूप से। १०. दिल का मर्यादा रूपी धन। ११. लोलुपता को। १२. संबंध। १३. बदनामी। १४. विशेष अनुकम्पा। १५. प्रतिशोध की शान।

छः

गुलशन में सय्याद[1] की साजिश आखिर को नाकाम हुई,
बालो-पर की नशवो-नुमा[2] कुछ और भी ज़ेरे-दाम[3] हुई।
मस्जिद के आदाब जुदा मैख़ाने का दस्तूर जुदा,
शैख की नादानी से इक मासूम सी शै बदनाम हुई।
शहरे-इश्क़ के रहने वाले ज़ीस्त बसर यूँ करते हैं[4],
आरिज़[5] महके सुबह मनाई, जुल्फें बिखरी शाम हुई।
महफिल-महफिल शमा जलाई हमने सुखने-गर्मी से,
कल थी बक़ंदे-तूरे-सीना[6] आज तजल्ली[7] आम हुई।
उसकी नजर भी ऐ 'ताबां' इक जादू है इक अफ़सूँ[8] है,
झुक के उठी एजाज़ हुई जब उठके झुकी इल्हाम[9] हुई।

---

१. आखेटक। २. बालों और परों का उगना और बढ़ना। ३. जाल के नीचे। ४. जीवन यों व्यतीत करते हैं। ५. कपोल। ६. कल तक चमक तूर पहाड़ तक सीमित थी अब हर जगह मौजूद है। ७. जादू। ८. चमत्कार। ९. ईश्वरीय संकेत।

सात

जो अपनी तंगी-ए-दामां[1] पे मुस्करा न सका,
सुना है अंजुमने-गुल में बार पा न सका[2]।
वो बदनसीब जो राज़े-बहार पा न सका,
चमन में शोला-ए-उरियां की[3] ताब ला न सका।
तुझे ये फ़िक्र नुमूदे-सहर[4] क़रीब आई,
मुझे यह ग़म कि चिराग़े-सहर[5] जला न सका।
बड़े अज़ाब[6] में है जान बादा ख्वारों की,
कि ज़िक्रे-जाम हुआ दौर-जाम आ न सका।
वही जबीं पे[7] ग़ुरूरे-शिकस्त[8] आज भी है,
ये नक़्श[9] वो है ज़माना जिसे मिटा न सका।
ख़राब जलवा-ए-साक़ी ख़राब जलवा-ए-मय,
बक़दे-होश[10] कोई मैकदे से जा न सका।
मिज़ाजे-हुस्न में[11] इतना तो दख़्ल[12] था 'ताबां',
हमें मिटा तो सका वो, मगर भुला न सका।

---

१. दामन की तंगी। २. फूलों की महफ़िल में स्थान न पा सका। ३. नग्न शोले की। ४. प्रभात-चिन्ह। ५. सुबह का दीपक। ६. कष्ट। ७. माथे पर। ८. हारने का अभिमान। ९. चित्र। १०. होश में रहते हुए। ११. प्रेमिका के स्वभाव में। १२. आधिपत्य।

दिल का मुआमला निगहे-मुख़्तसर[1] के साथ,
चलती रही है छेड़ सी कैफ़ो-असर[2] के साथ।
ये कारोबारे-शौक़ किसी बेख़बर के साथ,
खेला किया हूं काविशे-दर्दे जिगर[3] के साथ।
बेमायगी-ए-शौक़[4] मता-ए-नज़र[5] के साथ,
फ़ितरत[6] मज़ाक करती है अहले-हुनर के[7] साथ।
इक जंबिशे-ख़फ़ी पे[8] मदारे-हयातो-मर्ग[9],
वाबस्ता हो गये हैं किसी की नज़र के साथ।
दिलचस्प है नज़ारा-ए-गुलशन[10] नज़र है शर्त[11],
कांटे गुलों के साथ हैं शबनम[12] शरर[13] के साथ।
दिलका ज़ियां[14] था हासिले-अफ़सूने-इन्तिज़ार[15],
इक शमा थी कि बुझ गई नजमे-सहर के साथ[16]।
पाए-तलब को[17] लरज़िशे-पैहम[18] के बावजूद,
वाबस्तगी[19] वही है तेरी रहगुज़र[20] के साथ।
आवारगी-ए-नकहते-वर्बाद[21] देखिये,
निकली चमन को छोड़ के बादे-सहर के[22] साथ।
'ताबाँ' वही है शोरिशे-परवाज़ आज भी,
जुंबिश[23] में है फ़िज़ा-ए-चमन[24] बालो-पर के[25] साथ।

१. अल्पदृष्टि। २. मस्ती और शराब का प्रभाव। ३. हृदय की पीड़ा। ४. म की निर्धनता। ५. नज़र रूपी पूंजी। ६. प्रकृति। ७. कलाकारों के साथ। ८. हल्की सी हरकत पर। ९. जीवन तथा मृत्यु का आधार है। १०. बाग के दृश्य। ११. देखना ज़रूरी है। १२. ओस। १३. चिंगारी। १४. क्षति। १५. प्रतीक्षा रूपी जादू का निष्कर्ष। १६. सुबह के सितारे के। १७. ढूंढ़ने वाले पैरों को। १८. निरंतर लड़खड़ाहटों के। १९. संबंध। २०. मार्ग। २१. उजड़ी हुई सुगंधि का आवारापन। २२. प्रभात समीर के। २३. गति। २४. बाग का वातावरण। २५. बालों और परों के।

आठ

क़ुसूर इश्क़ में जाहिर है सब हमारा था,
तेरी निगाह ने दिल को अगर पुकारा था।
वो दिन भी क्या थे कि हर बात में इशारा था,
दिलों का राज़ निगाहों से आशकारा[1] था।
हवा-ए-शौक़[2] ने रंगे-हया[3] निखारा था,
मचन-चमन लबो-रुखसार का[4] नजारा था।
फ़रेब खा के तेरी शोखियों से क्या पूछें?
हयातो-मर्ग[5] में किस की तरफ़ इशारा था।
सुजूदे-हुस्न की[6] तमकी[7] पे बार[8] था वरना,
जबीने-शौक़ को ये नंग[9] भी गवारा था।
चमन में आग न लगती तो और क्या होता,
कि फूल-फूल के दामन में इक शरारा था।
तबाहियों का तो दिल को गिला नहीं लेकिन,
किसी गरीब का ये आखरी सहारा था।
बहुत लतीफ़[10] थे नज्जारे हुस्ने-बरहम[11] के,
मगर निगाह उठाने का किसको यारा था।

---

१. प्रकट। २. प्रेम रूपी वायु। ३. लज्जा का रंग। ४. होठों और कपोलों का। ५. जीवन और मृत्यु। ६. प्रेमिका के पंचांग प्रणाम। ७. दंभ। ८. बोझ। ९. इश्क रूपी माया। १०. छोटा। १०. सुन्दर।

ये कहिये ज़ौक़े जुनूं काम आ गया 'ताबां'
नहीं तो रस्मो-रहे-आगही ने मारा था।

नौ

बहार आई गुलअफशानियों के[1] दिन आये
उठाओ साज़ ग़ज़ल ख्वानियों के[2] दिन आये।
निगाहे-शौक़ की गुस्ताखियों का दौर आया,
दिलेखराब की नादानियों के दिन आये।
निगाहे-हुस्न खरीदारियों पे माइल[3] है,
मता-ए-शौक़[4] की अरज़ानियों के[5] दिन आये।

मिज़ाजे-अक्ल की नासाज़ियों का[6] मौसम है।
जुनूं की सिलसिला जुबानियों के[7] दिन आये।
सिरों ने दावते-आशुफ़तगी का कस्द[8] किया,
दिलों में दर्द की मेहमानियों के दिन आये।

चिराग़े-लाला-ओ-गुल की[9] टपक पड़ी हैं लवें,
चमन में फिर शरर अफशानियों के[10] दिन आये।
बहार बाइसे-जमियते-चमन[11] न हुई,
शमीमे-गुल[12] की परेशानियों के दिन आये।

---

१. मुंह मे फूल झड़ने के। २. गीत गाने के। ३. उतारु। ४. प्रेम रूपी धन। ५. सस्तेपन के। ६. बुद्धि का स्वास्थ्य बिगड़ने का। ७. उन्माद का आरम्भ करने के। ८. व्याकुलता को निमन्त्रित करने का निश्चय। ९. फूल रूपी दीपक। १०. चिंगारियां झड़ने के। ११. बाग के संगठन का कारण। १२. फूलों की।